सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 युएस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

अक्तूबर, 2018 वर्ष 17 अंक 08

भ्रष्टाचार मिटा देंगे

हमने बीड़ा उठाया है, बाहम मेल करा देंगे।
झगड़गये जो आपस में, उनको मित्र बना देंगे।।
हम हैं मुस्लिम हम हैं हिन्दी, भारत में हम रहते हैं।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, इनमें प्रेम बढ़ा देंगे।।
सदाचार का पाठ पढ़ा कर, नैतिकता का सबक़ सिखा कर।
मानवता घर घर पहुँचा कर भ्रष्टाचार मिटा देंगे।।
दुष्कर्मों की आये दिन जो खबरें आती रहती हैं।
ईश्वर–भय की शिक्षा द्वारा दुष्कर्मों को मिटा देंगे।।
बहुत से वतनी भाई हमारे प्यारे नबी से अपरिचित हैं।
नबी की हम शिक्षाओं द्वारा परिचय उनका करा देंगे।।
या रब रहमत और सलाम तेरे नबी पे निरन्तर हों।
पढ़ते हम हैं उनपे सलाम, तेरी रिज़ा हम पा लेंगे।।

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। SACHCHARAHI A/c. No. 10863759642 IFS Code: SBIN0000125 Swift Code: SBININBB157 State Bank of India, Main Branch, Lucknow. और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें। बराये करम पैसा जमा हो जाने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 या ईमेल पर खरीदारी नम्बर के साथ इत्तिला ज़रूर दे दें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
तक़्वा	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	12
आदर्श शासक	मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी	15
नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत	मौलाना मुहम्मद मंजूर नोमानी रह0	17
इस्लामिक पहचानों तथा	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी	21
शहीद और शहीदों के क़ातिल	इदारा	24
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	25
गैर मुस्लिम जगत के सामने	हज़रत मौ0 सय्यिद मु0 राबे हसनी नदवी	27
पड़ोसी का हक़	नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	29
तुर्की और इस्लामी बेदारी	हज़रत मौ0 सय्यिद मु0 राबे हसनी नदवी	31
कुछ पुरानी शरई मापें	इदारा	37
आसी की दुआ (पद्य)	इदारा	39
नई पीढ़ी के ईमान	हज़रत मौलाना अली मियां नदवी रह0	40
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुआन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-माइदाः

अनुवाद–

इस वजह से हमने बनी इस्राईल के लिए यह तय कर दिया कि जिसने भी बिना किसी जान के बदले या बिना ज़मीन में बिगाड़ के किसी को क़त्ल कर दिया तो मानो उसने सभी लोगों को क़त्ल कर डाला और जिसने किसी जान को बचा लिया उसने मानो सारे इंसानों को बचा लिया, उनके पास हमारे पैगम्बर खुली निशानियां लेकर जा चुके फिर उसके बाद भी उनमें से अधिकतर लोग ज़मीन में ज़ियादती करने वाले ही रहे हैं[1](32) जो लोग भी अल्लाह और उसके पैग़म्बर से जंग करते हैं और धरती में बिगाड़ा पैदा करने के लिए कोशिश करते रहते हैं उनकी सज़ा यही है कि वे क़त्ल कर डाले जाएं या उनको सूली पर चढ़ा दिया जाए या उनके एक ओर के हाथ और दूसरे ओर के पांव काट दिए जाएं, या देश से उनको निकाल दिया जाए, यह दुन्या में उनका अपमान है और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अज़ाब है[2](33) हां जो तुम्हारी पकड़ में आने से पहले तौबा कर लें तो जान लो कि बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है(34) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और उस तक पहुंचने का वसीला ढूंढो और उसके रास्ते में जान खपाते रहो ताकि तुम सफल हो[3](35) बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया अगर उनके पास ज़मीन भर चीज़ें हों और उतना ही और भी हो ताकि वे उसको मुक्तिदान में दे कर क़यामत के दिन के अज़ाब से बच जाएं तो यह सब चीज़ें उनकी ओर से स्वीकार न होंगी और उनके लिए दुखद अज़ाब है(36) वे चाहेंगे कि दोज़ख से निकल आएं और वे उससे निकलने वाले नहीं और उनके लिए स्थायी अज़ाब है(37) और जो कोई मर्द और औरत चोर हो तो उनकी करतूत के बदले में उनका हाथ काट दो अल्लाह की ओर से शिक्षाप्रद सज़ा के रूप में और अल्लाह ज़बरदस्त है हिकमत वाला है(38) फिर जो भी पाप के बाद तौबा कर ले और अपने हाल को सुधार ले तो बेशक अल्लाह उसकी तौबा स्वीकार करता है बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत दयालु है(39) क्या आप जानते नहीं कि अल्लाह ही के लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है जिसको चाहे अज़ाब दे और जिसको चाहे

माफ़ करे और अल्लाह को हर चीज़ की पूरी सामर्थ्य प्राप्त है[4](40) ऐ पैगम्बर! आप उन लोगों का ग़म न करें जो तेज़ी से कुफ़्र की ओर बढ़ते जा रहे हैं, चाहे उन लोगों में से हों जो अपने मुंह से कहते हैं कि हम ईमान लाए और उनके दिल ईमान वाले नहीं और चाहे वे जो यहूदी हों जो झूठ के लिए कान लगाए रखते हैं दूसरे लोगों के लिए सुनते हैं, जो आप के पास नहीं आते, बात को उनके सही जगह से बदलते रहते हैं कहते हैं कि अगर तुम को यह आदेश मिले तो ले लेना अगर न मिले तो बचे रहना और अल्लाह जिसको फितने में डाल दे तो उसके लिए आप अल्लाह के यहां कुछ नहीं कर सकते, यही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने पवित्र करने का इरादा ही नहीं किया उनके लिए दुन्या में भी रुसवाई है और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अज़ाब है[5](41)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. एक आदमी किसी को क़त्ल करता है तो दूसरे को भी उससे साहस होता है मानो उसने सबको क़त्ल कर दिया इसी तरह बचाने से बचाने का रिवाज वजूद में आता है मानो वह दूसरों की सुरक्षा और जीवन का साधन बना।

2. जो विद्रोह करे या डाका डाले, उसकी सज़ायें हैं, डाके में केवल क़त्ल किया तो उसकी सज़ा क़त्ल है, क़त्ल के साथ माल भी लूटा तो उसकी सज़ा सूली है और अगर केवल माल ही लूट सका क़त्ल नहीं किया तो उसकी सज़ा हाथ पांव काटना और अगर कोशिश की लेकिन गिरफ़्तार हो गया, न क़त्ल कर सका न लूट सका तो उसकी सज़ा देश बदर है और हां देश बदर के रूप विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं एक तो यह कि उसको देश के बाहर निकाल दिया जाए दूसरे यह कि उसको जेल में डाल दिया जाए और अगर पकड़ में आ जाने से पहले तौबा कर ले और खुद अपने आप को जज के हवाले कर दे तो माफ़ी हो सकती है, हां हुकूकुल इबाद (लोगों के अधिकार) अदा करना ज़रूरी है।

3. वसीले का मतलब हर वह नेक काम है जो अल्लाह से क़रीब होने का माध्ययम बन सके, मतलब यह है कि अल्लाह से क़रीब होने के लिए नेक कामों को वसीला बनाओ, जेहाद हर वह कोशिश है जो अल्लाह के दीन के लिए की जाए।

4. चोरी की यह सज़ा है ताकि उसकी रोक थाम हो सके जहां यह सज़ाएं लागू होती हैं वहां दो चार को सज़ा मिलते ही चोरी का दरवाज़ा बिल्कुल बन्द हो जाता है यह सज़ाएं इन्सानों के लिए कठिनाई और ज़हमत नहीं बल्कि पूर्णरूप से रहमत हैं फिर सब अल्लाह ही के दिये हुए आदेश हैं जो हर चीज़ का मालिक है और हिकमत वाला है।

5. यहूदियों में एक शादीशुदा मर्द व औरत ने बलात्कार किया जो उनमें शरीफ़

शेष पृष्ठ...08 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत अबू मूसा रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कसम खुदा की अगर अल्लाह चाहे तो मैं किसी बात पर कसम न खाऊँ और अगर खा लूं फिर उस से बेहतर कोई बात देखूं तो जरूर उसको इख्तियार कर लूं और कसम का कफ्फारा दे दूं।

(बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया वल्लाह जो अपने अहलो अयाल के बारे में कसम खा बैठे फिर उस पर कायम रहे तो यह अल्लाह के नज़दीक़ बड़े गुनाह की बात है, बेहतर है कि अपनी कसम तोड़ कर अल्लाह का फर्ज किया हुआ कफ्फारा अदा कर दे।

बेकार की कस्में खाने की मुमानियतः–

अनुवादः "अल्लाह तआ़ला तुम्हारी लायानी (अर्थात बेकार) कस्मों को नहीं पकड़ता लेकिन वह तुम्हारी उन कस्मों पर पकड़ करता है जिनको तुम मजबूत कर दो तो उसका कफ़्फ़ारा दस गरीबों को दरमियानी दर्जे का खाना देना है जो तुम अपने घर वालों को खिलाया करते हो, या उनको कपड़ा पहनाना या एक गुलाम आजाद करना।

फिर जिसको यह मुयस्सर न हो तो तीन दिन रोज़े रखे यह तुम्हारी कस्मों का कफ़्फ़ारा है जब तुम कसम खा बैठो, और अपनी कस्मों की हिफाजत रखो। (सूरः माईदा—89)

हजरत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि यह आयत (अर्थात ऊपर वाली आयत जिस का अनुवाद दिया गया) उन लोगों के बारे में उतरी जो हर बात पर "वल्लाह" "बिल्लाह" की कस्में खाया करते हैं। (बुखारी)

क्रय विक्रय करते समय क़सम खाने की कराहतः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है फरमाते थे क़स्में खा कर सौदा सलफ बेचने वालों का सौदा तो बिक जाता है लेकिन उसकी कमाई से बरकत चली जाती है।

(बुखारी—मुस्लिम)

हजरत अबू क़तादा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है फरमाते थे कि तुम सौदा बेचते समय ज़ियादा कस्में खाने से परहेज करो इससे सौदा तो बिक जाता है लेकिन बरकत चली जाती है। (मुस्लिम)

अल्लाह का नाम ले कर मांगनाः–

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह का वासता दे कर सवाल करो तो जन्नत का सवाल करो।

(अबू दाऊद)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने फरमाया जो तुम से अल्लह का वासता दे कर पनाह मांगे उसको पनाह दो, जो तुम से अल्लाह का वासता दे कर सवाल करे उसका सवाल पूरा करो और जो तुम्हारी दावत करे तुम उसकी दावत कबूल करो और जो तुम पर कोई एहसान करे उसका बदला दो, अगर तुम्हारे पास बदला देने लायक कोई चीज़ नहीं तो उसके लिए दुआ करो और इतनी दुआ करो के समझ लो बदला हो गया। (अबू दाऊद नसाई)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला के नज़दीक अति जलील नाम उस आदमी का है जो मलिकुल अमलाक़ यानी शहंशाह कहलाये।

(बुखारी–मुस्लिम)

फासिक और बिदअती को सरदार कहने की मुमानियतः–

हज़रत बुरैदा रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम मुनाफिक को सरदार न कहो, अगर तुमने उसको सरदार कह दिया तो तुम ने अपने परवरदिगार को नाराज कर दिया।

(अबू दाऊद)

बुखार को गाली देने की मुमानियतः–

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उम्मे साईब या उम्मे मुसय्यिब के यहां तशरीफ लाये और फरमाया उम्मे साईब या उम्मे मुसय्यिब तुम को क्या हुआ, तुम कांप क्यों रही हो, उन्होंने अर्ज किया बुखार है अल्लाह उसमें बरकत न दे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया बुखार को बुरा न कहो, यह आदमी की खताओं को इस तरह मिटा देता है जिस तरह लोहारों की धौकनी लोहे के मैल कुचैल को मिटाती है।

(मुस्लिम)

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा .....

लोगों में थे तौरेत का आदेश पथराव करके मार डालने का था, उन्होंने सोचा शायद कुर्आन का आदेश कोड़े मारने का हो इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास दूत भेजे कि अगर कोड़े की बात कहें तो मान लेना और पथराव करके मार डालने की बात कहें तो न मानना, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो बात कही जाएगी मानोगे तो उन्होंने इकरार कर लिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पथराव करके मार डालने का आदेश दिया तो वे मुकर गए और कहने लगे कि तौरेत का तो आदेश यह नहीं है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तौरेत मंगवाई जब वह जगह आई तो एक आलिम (Scholar) *ने उस पर उंगली रख ली, हज़रत अब्दुल्लाह पुत्र सलाम ने उंगली उठाई और वे अपमानित हुए, उन यहूदियों का हाल यही था कि उनकी चाहत के अनुसार गलत बातें भी की जाएं तो भी कान लगा–लगा कर सुनते थे और उनके आलिम अपनी ओर से आदेश बदलते रहते थे और इसके लिए घूस लेते थे।*

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

तक़्वा

(अर्थात ईशभय और ईशप्रेम से उसका आज्ञाकारी होना)

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

तक़्वा अरबी शब्द है, इसका अनुवाद ख़ौफ से भी किया गया है और डर से भी, हिन्दी में इसके लिए भय भी लिखा गया है, संयम भी, परन्तु तक़्वे का अनुवाद किसी दूसरे शब्द में कठिन है, तक़्वे को भय कह सकते हैं लेकिन भय दो प्रकार का होता है एक भय बाघ से होता है, एक भय आग से होता है, जहां केवल भय है, एक भय माँ से होता है जो बुरे कर्मों पर क्रोधित होती है, मारती है परन्तु दूसरे समय प्यार भी करती है, ईश्वर का भय कुछ इससे मिलता जुलता है, वह अवज्ञा करने पर अवज्ञाकारी से क्रोधित होता है, उसको दण्डित करता है परन्तु जब उसका बन्दा अपने किये पर लज्जित हो कर क्षमा मांगता है और आज्ञापालन करने का प्रण करता है तो ईश्वर उससे प्रसन्न हो कर मां से कहीं अधिक प्यार करता है तथा पुरस्कृत करता है। अतः तक़्वे का अर्थ केवल भय से पूरा नहीं होता, तक़्वे को यूं समझें कि आदमी अल्लाह के भय से वह सारे काम छोड़ दे जिनको ईश्वर ने अपने पैग़म्बरों द्वारा छोड़ देने का आदेश दिया है तथा उन सारे कामों को अपने जीवन में जारी करे जिनको करने का ईश्वर द्वारा आदेश मिला है तथा तक़्वे को इस प्रकार भी समझना चाहिए कि मनुष्य हर सोच विचार के समय और हर काम के समय अल्लाह को ध्यान में लाए कि वह हमारे इस सोच विचार या हमारे इस कर्म से कहीं नाराज़ न हो जाए और उसकी प्रसन्नता का हर समय ध्यान रहे। तक़्वे के लिए उर्दू में एक अच्छा शब्द लिहाज़ करना है अर्थात अल्लाह का लिहाज करे तक़्वा ग्रहण करने का आदेश पवित्र कुर्आन में अनेकों आयतों में आया है और तक़्वे से सांसारिक लाभ भी जगह जगह बताये गये हैं जैसे—

''जो अल्लाह से डरेगा अर्थात तक़्वा अपनायेगा अल्लाह तआला उसको कठिनाइयों से उबारेगा, उसको ऐसे मार्ग से रोज़ी देगा जिधर उसका गुमान भी न जाता हो''। (अत्तलाक़:2,3)

''वास्तव में तुम में सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है जो तक़्वे में सबसे अधिक है'' (अल हुजरातः 13) अतः तक़्वा पाने के लिए पापों की जानकारी तथा भले कामों की जानकारी आवश्यक है। ताकि पापों से बचा जा सके और भले कामों को अपनाया जा सके।

पाप दो प्रकार के होते हैं, कुछ का सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है विचारों से होता है जिनको विश्वास कहते हैं, विश्वास में सबसे महत्वपूर्ण विश्वास अल्लाह को एक मानना है, उसके सारे गुणों को स्वीकार करना है इससे

बढ़ कर और कोई भला काम नहीं और सबसे बड़ा पाप ईश्वर के साथ किसी को साझी मानना है, अर्थात अनेकेश्वरवादी होना है या ईश्वर का इंकार कर देना अर्थात नास्तिक बन जाना है। इसके साथ ही यह मानना अनिवार्य है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और ये भी मानना अनिवार्य है कि अल्लाह ने फिरिश्ते बनाये हैं जिनकी संख्या अत्यधिक है। अल्लाह ने अपने बन्दों को अपनी पसंद की राह दिखाने के लिए अपने पैग़म्बरों पर किताबें उतारी हैं। अल्लाह ने अपने बन्दों के पथ प्रदर्शन हेतु बहुत से रसूल और नबी बनाये हैं और ये भी मानना अनिवार्य है कि कियामत आयेगी और तक़दीर का मानना भी अनिवार्य है कि अच्छी हो या बुरी वह अल्लाह ही की तरफ से होती है। तथा सबसे महत्वपूर्ण बात यह मानना है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के अंतिम नबी हैं और उन पर अल्लाह की अंतिम पुस्तक पवित्र कुर्आन उतारी गई और कियामत तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुकरण के बिना मोक्ष असम्भव है।

सच्चा राही में एक शीर्षक ''तीन बुनियादी अक़ाइद'' की श्रृंखला चल रही है वहां से विश्वास की सारी बातों को जान लेना चाहिए और उन सबको मानना अनिवार्य समझना चाहिए।

विश्वास के अतिरिक्त आमाल (कर्म) हैं जिन कर्मों को अल्लाह के अंतिम नबी ने भला बताया है उनको अपनाना अनिवार्य है और जिन कर्मों को अल्लाह के नबी ने बुरा बताया है उनको छोड़ना अनिवार्य है, इन दोनों प्रकार के कर्मों का विस्तार अत्यधिक है यहां कुछ की ओर संकेत किया जाता है।

भले कर्मः— सबसे पहले विश्वास का शुद्ध होना, अल्लाह की इबादत करना, पांचों वक़्त की नमाज़ पढ़ना, रमज़ान के रोज़े रखना माल की ज़कात देना, सामर्थ्य होने पर जीवन में एक बार हज करना, जिन चीज़ों को अल्लाह ने हलाल किया है उन्हीं को खाना, शरीअ़त के अनुकूल निकाह करना, वैध व्यवसाय द्वारा आजीविका उपार्जन करना अपने मां बाप सम्बन्धियों पड़ोसियों देश वासियों आदि के हक अदा करना, मरने के बाद मुर्दे को शरीअ़त के अनुकूल नहलाना, कफ़नाना जनाज़े की नमाज़ पढ़ना और उसको दफ़नाना, पवित्र कुर्आन की तिलावत करना, अल्लाह का ज़िक्र करना, अल्लाह के नबी पर दुरूद व सलाम पढ़ना, आदि।

बुरे कर्मः— सबसे बड़ा पाप शिर्क (अनेकेशवरवाद) है इसी प्रकार कुफ़्र (नास्तिकता) है दूसरे और कुछ बड़े गुनाह यह हैं झूठ बोलना, झूठी गवाही देना, नमाज़ छोड़ना, रमज़ान के रोज़े न रखना, माल की ज़कात न देना, हज फर्ज़ होने पर हज न करना, हराम माल खाना, घूस खाना, ब्याज खाना, नौकरी में काम चोरी करना, दूसरों को अकारण कष्ट देना,

किसी की पीठ पीछे बुराई करना, चुग़ली खाना किसी की बहन बेटी पर बुरी नज़र डालना नामहरम औरतों से दोस्ती करना, उनसे तन्हाई में मिलना, दुष्कर्म करना या व्यभिचार करना, किसी को धोखा देना, किसी का ऐब ढूंढना आदि और बहुत से बुरे कर्म हैं आदमी को जो काम बुरा लगे उससे बचें। तात्यपर्य यह है कि अल्लाह के नबी ने जिस काम से रोका है उससे रुक जाए और जिस काम का आदेश दिया है उसको अपना ले। पवित्र कुर्आन में आया है। भावार्थः अल्लाह के नबी ने जब इस्लाम की दावत दी तो कुछ लोगों ने उसका इनकार किया और जो लोग इस्लाम में दाखिल हो रहे थे उनके मार्ग में रुकावट डाली, तो उनके भले काम भी अकारत हो गये और जो ईमान लाए और भले काम किये और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो कुछ अल्लाह ने उतारा उसको मान लिया और वह तो अल्लाह की ओर से ह़क़ था ही ऐसे लोगों के पिछले गुनाह माफ कर दिये गये और उनका हाल बेहतर कर दिया गया''।

(सूरे मुहम्मदः 1,2)

हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह तक़्वा इख़्तियार करे अलबत्ता तक़्वे के दरजात (श्रेणियां) हैं संभव हो तो ऐसा तक़्वा इख़्तियार करे जैसा कि उसका ह़क़ है यह आदेश सूरह आलेइमरान की आयत 102 में है। लेकिन इंसान कमज़ोर है अतः आदेश है कि जितना हो सके तक़्वा इख़्तियार करो, यह अनुमति सूरह तग़ाबुन आयत नं0 16 में है।

अब अगर हर मुसलमान अल्लाह और उसके रसूल का अनुपालन करते हुए तक़्वा अपनाए तो सोचना चाहिए कि किस तरह का समाज अस्तित्व में आयेगा, यह वह समाज होगा जिसमें शान्ति होगी और हर व्यक्ति संतुष्ट होगा।

परन्तु इंसान अपनी प्रकृति में कमज़ोर पैदा हुआ है उसके साथ तामस मन है और शैतान की छूट भी अतः उससे पाप हो ही जाते हैं परन्तु अल्लाह का बड़ा करम है कि पापी अगर अपने पाप से तौबा कर ले और अल्लाह से क्षमा मांग ले तो पाप रहित हो जाता है परन्तु तौबा (पश्चाताप) की तीन शर्तें हैंः–

1. अपने पाप पर लज्जित हो।
2. पाप तुरन्त छोड़ दे।
3. भविष्य में पाप न करने का प्रण करे। अगर किसी बन्दे का हक मारा है तो उस का हक़ अदा करे या उस से क्षमा चाह ले।

इन शर्तों के साथ पापी तौबा करे तो वह पाप रहित हो जाता है फिर भी तामस मन तथा शैतान प्रण पर रहने न दे और पाप करवा दे तो फिर पहले की तरह तौबा करे, अल्लाह से उम्मीद है कि वह क्षमा कर दिया जाएगा, चाहे जितना बड़ा पाप हो और चाहे जितने अधिक पाप हों परन्तु तौबा करने में देर न करना चाहिए, वह तौबा स्वीकार नहीं होती जो मौत आ जाने के वक़्त की जाए जैसा कि सूरह निसा आयत 18 में है।

शेष पृष्ठ....23 पर

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

रिसालत (दूतता)

नबियों की विशिष्टताः–

नबी अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम का इस जीवन–दायी ज्ञान में कोई शरीक व साझी नहीं जिसके बिना इन्सानों को न सौभाग्य हासिल हो सकता है न निजात मिल सकती है। वह इल्म जिसकी रौशनी में इन्सान अपने पैदा करने वाले (ख़ालिक़) और इस सृष्टि रचियता, उसके उच्च गुणों तथा उसके और बन्दों के आपसी सम्बन्ध को मालूम करता है, इसी के प्रकाश में मानव का आदि–अन्त ज्ञात होता है और इस दुन्या में उसका मुकाम और रब के मुकाबले में इन्सान की धारणा सुनिश्चित होती है। इसी ज्ञान द्वारा अल्लाह को प्रसन्न व अप्रसन्न करने वाले कर्मों का निर्धारण होता है। इसी के प्रकाश में यह मालूम किया जाता है कि कौन से कर्म आख़िरत में इन्सान को भाग्यशाली व सफल अथवा असफल बनाने वाले हैं। इसी के अलोक में समझा जा सकता है कि कौन से विश्वास, कर्म, आचरण व व्यवहार का क्या पुण्य या पाप मिलेगा और इंसान द्वारा किए हुए कर्मों का क्या प्रभाव व परिणाम होगा। यही वह ज्ञान है जिसको ''इल्मुन्नजात'' (मोक्ष ज्ञान) कहा जा सकता है।

नबी (संदेष्टा) उच्चय योग्यताओं, कोमल अनुभूति तथा प्राकृतिक बुद्धिमत्ता के मालिक होने के बावजूद अपने ज़माने के प्रचलित व सामान्य विज्ञान में हस्तक्षेप नहीं करते, न इस विज्ञान व कला कौशल में अपने कमाल या अपनी महारत का दावा करते हैं, बल्कि वह तमाम चीज़ों से बिल्कुल अलग सिर्फ उस कर्तव्य का निर्वाह तथा उसी सेवा कार्य में लगे रहते हैं जिनके लिए उनका अभ्युदय हुआ है और जिस काम के लिए वह भेजे गये थे और जिन पर इन्सान के अहोभाग्य का दारोमदार है, वह उसी ज्ञान को दूसरों तक पहुंचाने की धुन में लगे रहे हैं।

नबियों की शिक्षा से विमुख होने का अंजामः–

सभ्य तथा विकसित क़ौमें जो अपने अपने ज़माने में सभ्यता व संस्कृति, बुद्धिमत्ता तथा ज्ञानमयी खोज में उच्चतम स्तर पर पहुंची हुई थीं वह भी नबियों की शिक्षा तथा उनके विशेष ज्ञान की उतनी ही ज़रूरतमंद थीं जितना कि नदी में डूबने वाला सहारे के लिए किसी नाव का मुहताज होता है या जीवन से निराश रोगी को इक्सीर दवा की ज़रूरत होती है। इन विकसित क़ौमों के लोग इस विशेष तथा आवश्यक ज्ञान के ऐतबार से (दूसरे ज्ञान, या

सभ्यता व कल्चर में जितने भी आगे रहे हों) दूध मुहें बच्चे, अज्ञान और ख़ाली हाथ व बेसरो सामान थे, और उन्होंने अपनी ज्ञानवी सफलताओं और सभ्यता के विकास के बावजूद जब नबियों के ज्ञान को रद्द कर दिया और उसका मज़ाक उड़ाया, तो उन्होंने अपने लिए और अपनी क़ौम व समाज के लिए विनाश मोल लिया। अनेक सभ्य और विकसित क़ौमें जो ज्ञान व साहित्य के बहुमूल्य ख़ज़ानों से मालामाल थीं, और बुद्धिमत्ता में जिनका उदाहरण दिया जाता था, इस इन्कार, अभियान, स्वार्थ तथा अपने विज्ञान व कलाकौशल पर गर्व का शिकार हो चुकी हैं। अपने ज़माने के नबी की लाई हुई शिक्षाओं को उन्होंने हिकारत, हीन व नफरत की नज़र से देखा उससे विमुख हुए, उसकी कद्र नहीं की, उसको बेकार व बेक़ीमत समझा तो वह इसी घमंड की नज़र हो गयीं और वह मूर्खता जो उच्च बुद्धिमत्ता नज़र आती थी, वह तंग नज़री (संकीर्णता) जिसको उस समय पर दूर दृष्टि तथा यथार्थवाद कहा जाता था उनको ले डूबी और उन्होंने अपने किये का मज़ा चख़ लिया।

नबियों के ज्ञान और दूसरे ज्ञान व कौशल की तुलनाः–

नबियों के ज्ञान तथा दूसरे विद्वानों व वैज्ञानिकों के ज्ञान व कला–कौशल का स्पष्ट अन्तर एक कहानी से सुस्पष्ट हो जाता है, पाठकों ने इसे सुना तो ज़रूर होगा, लेकिन शायद इस प्रकार इस अन्तर पर सटीक न किया होगा और न इसके जतनपूर्ण होने को मालूम किया होगा और माफ कीजिएगा, यह कहानी आप ही लोगों अर्थात छात्रों से ही सम्बन्धित है, कथाकार सादिकुल बयान कहता है कि एक बार कुछ छात्र मनोरंजन के लिए एक नाव पर सवार हुए। तबीयत मौज पर थी, समय सुहाना था, मस्त हवा चल रही थी, और काम कुछ न था। ये युवा खामोश कैसे बैठ सकते थे। जाहिल केवट मनोरंजन का अच्छा साधन और कटाक्ष व मज़ाक व तफरीह का सामान। अतएव एक तेज व तर्रार छात्र ने मल्लाह को सम्बोधित करके कहा–

''चचा! आपने कौन से विषय पढ़े हैं?''

मल्लाह ने उत्तर दिया, "भैया! मैं कुछ पढ़ा लिखा नहीं।"

छात्र ने ठण्डी सांस भर कर कहा, ''अरे आपने साइंस नहीं पढ़ी।''

मल्लाह ने कहा, ''मैंने तो इसका नाम भी नहीं सुना।''

दूसरा युवक बोला, ''ज्योमिट्री और बीजगणित तो आप जरूर जानते होंगे, मल्लाह ने कहा, ''भैया! यह नाम मेरे लिए बिल्कुल नये हैं।''

अब तीसरे युवक ने शोशा छोड़ा, 'मगर आपने इतिहास और भूगोल तो पढ़ा होगा।''

मल्लाह ने कहा, ''सरकार! यह शहर के नाम हैं या आदमी के?'' मल्लाह का यह जवाब सुनकर लड़के हंस पड़े, और कहकहा लगाया फिर लड़कों ने पूछा, ''चचा

मियां! आपकी उम्र क्या होगी?''

मल्लाहः ''यही कोई चालीस साल।''

लड़केः ''आपने अपनी आधी उम्र बर्बाद की, और कुछ पढ़ा लिखा नहीं।'' मल्लाह बेचारा शर्मिन्दा हो कर रह गया और चुप्पी साध ली।

कुदरत का तमाशा देखिए कि नाव नदी में थोड़ी दूर गयी थी कि तूफान आ गया, लहरें मुंह फैलाये हुए बढ़ रही थीं, और नाव हिचकोले ले रही थी कि अब डूबी तब डूबी। नदी में नवकावाहन का लड़कों का पहला अनुभव था। उनके होश उड़ गये, चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं। अब जाहिल मल्लाह की बारी आई। उसने गम्भीरता पूर्वक मुंह बना कर पूछा ''भैया! आपने कौन–कौन से विषय पढ़े हैं?''

लड़के उस भोले भाले जाहिल मल्लाह का मक़सद नहीं समझ सके। और कालेज या स्कूल में पढ़े हुए विषयों की लम्बी सूची गिनानी शुरू कर दी और जब भारी भरकम और रौब में लाने वाले नाम गिना चुके तो उसने मुस्कराते हुए पूछा, ''ठीक है, यह सब तो पढ़ लिया लेकिन क्या तैराकी भी सीखी है? अगर अल्लाह (ईश्वर) न करे, नाव उल्ट जाये तो किनारे तक कैसे पहुंच सकोगे?''

लड़कों में कोई भी तैरना नहीं जानता था। उन्होंने दुःख के साथ उत्तर दिया, ''चाचा जी! यही एक विषय हम से रह गया है हम नहीं सीख सके।'' लड़कों का जवाब सुन कर मल्लाह जोर से हंसा और कहा, ''मियां! मैंने तो अपनी आधी उम्र खोई, मगर तुमने तो पूरी उम्र डुबोई, इसलिए कि इस तूफान में तुम्हारा पढ़ा लिखा कुछ काम न आयेगा, आज तैराकी ही तुम्हारी जान बचा सकती है, और वह तुम जानते ही नहीं।''

विकास के उच्च सोपान तय करने और सभ्यता व संस्कृति के उच्च स्तर पर पहुंचने वाली तमाम क़ौमों की यही हालत है, चाहे वह ज्ञान व विज्ञान के इन्साइक्लोपीडिया ही क्यों न रही हों। यह इन्सानों के तमाम ज्ञान, विज्ञान, आविष्कार तथा इस विशाल संसार में निहित सम्पत्तियों को खोज निकालने में पूरी दुन्या की चौधरी ही क्यों न रही हों, लेकिन वह उस ज्ञान से अनभिज्ञ थीं जिस से अल्लाह की मारफ़त हासिल होती है, जिसके जरिये, ख़ालिक (सृजनहार) तक पहुंचा जा सकता है, जिसके सहारे लक्ष्य को पाया जा सकता है, जो कर्म और सोच को दुरुस्त रखता, काम और कामनाओं को काबू में करता है। आचरण को सद् तथा मन को सभ्य बनाता है, बुराइयों से रोकता और भलाइयों पर उभारता है। दिल में अल्लाह का भय उत्पन्न करता है। जिसके बिना न समाज का सुधार हो सकता है न सभ्यता व संस्कृति की हिफाजत। जो इन्सान को परलोक की तैयारी के लिए आमादा करता है,

शेष पृष्ठ....36 पर

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी —अनुवादः अतहर हुसैन

दूसरे ख़लीफा
हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 का शासन काल

बच्चे को बैतुलमाल से एक दिर्हम न लेने देनाः—

आप को किसी हाल में भी गवारा न था कि उनके ख़ानदान के किसी बच्चे को भी बैतुलमाल से लाभ उठाने का अवसर प्राप्त हो। एक बार हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि0 को बैतुलमाल की जाँच—पड़ताल का अवसर मिला। अवलोकन में उन्हें एक दिरहम मिला। पास ही हज़रत उमर रज़ि0 का एक बच्चा दिखाई पड़ा, उन्होंने वह दिरहम उसे दे दिया। यह बहुत ही मामूली सी बात थी लेकिन हज़रत उमर रज़ि0 को यह मामूली व्यवहार भी गवारा न हुआ। जब आपको मालूम हुआ तो आपने बच्चे से दिर्हम छीन कर बैतुलमाल में दाख़िल कर दिया और हज़रत अबू मूसा को बुला कर अप्रसन्नता प्रकट की और कहा, ''क्या मेरे बच्चे के अलावा सारे मदीने में तुम्हें कोई और हाजतमन्द नज़र न आया जिसके साथ सुलूक करते, तुम क्या चहते हो, क्या तुम्हारी यह इच्छा है कि क़यामत के दिन सारी उम्मत का बोझ मेरे सिर पर लदा हो और मैं कड़ी पूछताछ में ग्रस्त हूँ?''

अंगूठी हाथ में नहीं लेने दीः—

एक बार इराक़ के गवर्नर हज़रत मूसा अशअ़री ने वहां की आय केन्द्रीय सरकार को भेजी। उसमें नक़द राशि के अतिरिक्त कुछ जेवर भी थे। जिस समय यह माल हज़रत उमर रज़ि0 की सेवा में प्रस्तुत किया गया उस समय आपके पास आपके स्वर्गीय भाई हज़रत ज़ैद रज़ि0 की छोटी बच्ची अस्मा बैठी हुई खेल रही थी। हज़रत ज़ैद रज़ि0 से हज़रत उमर रज़ि0 को बहुत ज़ियादा महब्बत थी। उनकी शहादत के बाद आप बहुधा उन्हें याद किया करते थे और शोक से पीड़ित हो कर दिल भर आता था और आंखों में आंसू भर जाते। भतीजी को भाई की यादगार समझते थे और उससे बहुत प्रेम करते थे लेकिन इस असाधारण स्नेह तथा प्रेम के बावजूद आपने सरकारी आमदनी से विरक्त का जो नियम अपने लिए मुकर्रर कर लिया था उसमें कणमात्र भी फ़र्क़ न आने दिया। इराक़ से आये हुए ज़ेवर सामने पड़े थे, एक छोटी सी अंगूठी बच्ची के दिल को भा गई, उसने लपक कर हाथ में उठा ली लेकिन हज़रत उमर रज़ि0 ने अपने रिश्तेदारों के साथ इतनी भी रियायत गवारा न की और बच्ची के हाथ से अंगूठी लेकर बैतुलमाल के धन में जमा कर दी और इस ध्यान से, कि ऐसा न हो कि बच्ची नासमझ है फिर किसी वस्तु की ओर हाथ बढ़ाए, आप ने उसे अपने पास से हटा दिया।

इसी प्रकार जलूला की विजय के पश्चात जब माले

ग़नीमत में बहुत से ज़ेवर आपके पास आये तो उस अवसर पर भी आपने अपने खानदान वालों को उनसे लाभ उठाने का मौक़ा न दिया। यहां तक कि आपके एक पुत्र ने एक अंगूठी मांगी लेकिन आपने सख़्ती के साथ उनकी दरख़्वास्त रद कर दी।

राजकर्मचारियों की भेंट स्वीकार न करते थेः-

राजकर्मचारियों तथा पदाधिकारी अगर कोई भेंट तथा उपहार प्रस्तुत करते तो आप स्वीकार न करते और केवल वापस ही न कर देते बल्कि उनके सामने ऐसी अप्रसन्नता प्रकट करते कि भविष्य में उन्हें किसी प्रकार का उपहार प्रस्तुत करने का साहस ही न होता। एक बार इराक़ के गवर्नर हज़रत अबू मूसा अशअ़री ने आपकी धर्मपत्नी हज़रत आयला बिन्त ज़ैद की सेवा में एक क़ीमती चादर भेजी। हज़रत उमर रज़ि0 को मालूम हुआ तो आप बहुत नाराज़ हुए और बीवी से चादर लेकर अबू मूसा रज़ि0 को वापस कर दी और कहा मुझे इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

इसी तरह आज़र बाईजान की विजय के बाद वहां के उच्चाधिकारी उतबा इब्न फ़रक़द ने मिठाई की दो टोकरियां आपको भेजीं। उतबा का दास सहीम जब यह मिठाई ले कर आपके पास आया तो ज़रा सा टुकड़ा उठा कर मुंह में रखा, मिठाई स्वादिष्ट थी परन्तु आपने तुरन्त ही हाथ खींच लिया और सहीम से पूछा बताओ क्या यह मिठाई समस्त मुहाजिरों ने जी भर कर खा ली है? सहीम ने कहा, नहीं अमीरुल–मोमिनीन, यह तो केवल आप ही के लिए भेजी है। यह सुन कर हज़रत उमर रज़ि0 बहुत नाराज़ हुए और उतबा इब्न फ़रक़द को लिखा ''अल्लाह के बन्दे अमीरुल मोमिनीन उमर की ओर से उतबा को मालूम हो कि यह न तुम्हारे और न तुम्हारे माता पिता के प्रयास तथा परिश्रम का फल है, मैं कोई भी ऐसी वस्तु नहीं खा सकता जो सब मुसलमानों के घरों में यथेष्ट मात्रा में मौजूद न हो।''

पिछले पृष्ठों में यह बात आ चुकी है कि आप बहुत ही साधारण भोजन करते थे और फटे पुराने कपड़े पहनते थे और लोगों के बहुत आग्रह करने पर भी यह आदत कभी नहीं बदली। इस प्रकार की प्रार्थनाओं के उत्तर में कि खुदा ने आपको जो सम्मान प्रदान किया है उसके लिहाज़ से सुख तथा आनन्द का जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

इस प्रकार के प्रार्थनाओं के उत्तर में आपके शब्द इतिहास के ग्रन्थों में सुरक्षित हैं–

''मैं क़ौम का अमीन हूं। अमानत में ख़्यानत जायज़ नहीं, मैं बहुत ही बुरा हाकिम हूंगा अगर खुद अच्छा खाऊँ और दूसरों को बुरा भोजन खिलाऊँ।''

सम्मान हेतु खड़े होने की मनाहीः-

समानता की भावना केवल खाने कपड़े तक सीमित न थी अपितु जीवन के अंग–प्रत्यंग में समानता की भावना रची बसी थी और किसी भी

शेष पृष्ठ....23 पर

–पिछले अंक से आगे

नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत

–मौलाना मुहम्मद मंजूर नोमानी रह0

–हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

तहज्जुद, चाश्त, सलाते हाजत, सलाते इस्तिख़ाराः–

इस तफ्सीली मजमून में जैसा कि नाज़रीन ने महसूस किया होगा नमाज़ के मुतअल्लिक़ सिर्फ उसूली बातें बयान की गई हैं यानी नमाज़ की अज़मत व अहम्मीयत, उसकी रूह व हक़ीकत, हक़ीकी नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, सहा–बए–किराम और अकाबिरे उम्मत के वाकियात जिनके पढ़ने और सुन्ने से हक़ीकी नमाज़ पढ़ने का जज़्बा और शौक़ पैदा हो, लेकिन नमाज़ से मुतअल्लिक मसाइल और तफ्सीली बातें इस लेख में नहीं लाई गईं, यह चीजें फिक़्ही और दर्सी किताबों में ज़िक्र की जाती हैं, अलबत्ता अब बाज़ मुख़्लिसीन और तालिबीन के मश्वरे पर तहज्जुद और चाश्त वगैरा नफ़्ली नमाज़ों के मुखतसर तरगीबी बयान का इज़ाफा इस मजमून में मुनासिब समझा गया, जिन में बड़ी खैर है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बड़ी फज़ीलत बयान फरमाई है और बहुत से लोग सिर्फ नावाकिफीयत की वजह से इस खैरे अज़ीम से महरूम हैं, अल्लाह तआला इस इजाफे को आम नाज़रीन के लिए नफामन्द बनाए और क़बूल फरमाए।

तहज्जुदः–

जैसा कि मालूम है कि फर्ज तो रोज़ सिर्फ पांच नमाज़ें हैं और कुछ उन्हीं के साथ पढ़ी जाने वाली सुन्नतें और नवाफिल हैं जिनके पढ़ने का अल्हम्दुलिल्लाह हमारे यहां के दीनदारों में आम रवाज है (बल्कि अवाम में तो उन की पाबन्दी का ऐसा एहतिमाम है कि जिसकी इस्लाह और तादील की जरूरत है) लेकिन इन के अलावा बाज़ और नफ़्ली नमाज़ें हैं जिन की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, खुसूसीयत के साथ तरगीब देते थे, और खुद भी एहतिमाम फरमाते थे, इनमें सब से अफ्ज़ल और अहम तहज्जुद है खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, का इरशाद है, तर्जुमा– ''फराइज़ के बाद सब नमाज़ों में अफ्ज़ल तहज्जुद है''।

एक दूसरी हदीस में है कि आपने सहा–बए–किराम रज़ि0 से इरशाद फरमाया, तर्जुमा –''तुम तहज्जुद को लाज़िम पकड़ लो क्यों कि वह तुम से पहले अल्लाह के सालेह बन्दों का तरीक़ा और मामूल रहा है और तुम्हारे लिए अल्लाह तआला के कुर्ब का ख़ास वसीला है और आखिरत में तुम्हारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा बनने वाला और दुन्या में गुनाहों से रोकने वाला है।'' (तिर्मिजी)।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, नमाज़ का बड़ा एहतिमाम फरमाते थे

फिर भी सफरों में हस्बे मौक़ा दूसरे नवाफ़िल बल्कि मुअक्किदा सुन्नतें भी कभी कभी तर्क फरमा देते थे लेकिन तहज्जुद सफर में भी पाबन्दी के साथ पढ़ते थे और यही नमाज़े तहज्जुद है जिस को आप इस कदर तवील पढ़ते थे कि पांव मुबारक पर वरम आ जाता था।

हज़रत जुनैद बग़दादी रह0 के बारे में मन्कूल है कि आप की वफात के बाद बाज़ अहलुल्लाह ने आप को ख्वाब में देखा तो पूछा कि क्या गुज़री? जवाब में फरमाया तर्जुमा–''हक़ाइक़ व मआरिफ की जो ऊँची ऊँची बातें हम इबारात व इशारात में किया करते थे वह सब हवा हो गईं और बस तहज्जुद की वह रकअतें काम आईं जो रात के अंधेरे में हम पढ़ा करते थे।

चाश्तः–

तहज्जुद के बाद नवाफ़िल में चाश्त का दर्जा है, हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, ने मुझे खास तौर से वसीयत फरमाई थी कि मैं चाश्त का दोगाना जरूर पढ़ा करूँ।

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 ही की एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़े चाश्त के बारे में फरमाया, तर्जमा– ''जिसने दोगानए चाश्त का एहतिमाम किया उसके सारे गुनाह बख़्श दिए जाएंगे अगर चे वह कसरत में समन्दर के झाग के बराबर हों''।

(मुस्नदे अहमद– तिर्मिज़ी)

एक दूसरी हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला अपने बन्दों को मुखातब करके फरमाता है, तर्जमा ''ऐ फ़रज़न्दे आदम तू दिन के इब्तिदाई हिस्से में चार रकअ़तें मेरे लिए पढ़ा कर मैं दिन के आख़िरी हिस्से तक तुझे किफायत करूंगा।''

(तिर्मिजी अ़न अबी–दरदा)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 की पहली दोनों हदीसों में चाश्त की सिर्फ दो रकअतों का ज़िक्र है और हज़रत अबू दरदा रज़ि0 वाली इस हदीस में चार रकअतें पढ़ने की तरग़ीब दी गई है और बाज़ दूसरी हदीसों में आठ रकअत का जिक्र भी आया है, अस्ल बात यह है कि नवाफिल में इसकी पूरी गुंजाइश है कि चाहे तो सिर्फ दो ही रकअतें पढ़े और चाहे तो ज़ियादा यानी चार या आठ पढ़े, यही हाल तहज्जुद का भी है, खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, तहज्जुद में अक्सर आठ रकअतें पढ़ते थे और कभी उस से कम सिर्फ छे या चार, यहां तक कि बाज औक़ात आपने सिर्फ दो रकअ़तें भी पढ़ी हैं।

तहज्जुद और चाश्त का वक़्तः–

तहज्जुद का अस्ल और अफ़ज़ल वक़्त आधी रात के बाद से सुब्हे सादिक़ होने तक है, लेकिन जिन को अखीर शब में उठना मुश्किल हो उन के लिए गुंजाइश है कि वह इशा के बाद ही पढ़

लिया करें और चाश्त का वक़्त सूरज चढ़ने के बाद से ले कर करीब ज़वाल के वक़्त तक है लेकिन बेहतर यह है कि पहले चौथाई हिस्से में ही पढ़ ली जाए।

वाजेह रहे कि इन दोनों नमाज़ों का कोई खास तरीक़ा नहीं है बल्कि जिस तरह आम सुन्नतें और नफ़्ल पढ़ी जाती हैं उसी तरह तहज्जुद और चाश्त की रकअतें भी पढ़ी जाती हैं।

सलाते हाजतः-

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला से अपनी हाजतें मांगने और पूरी कराने के लिए एक खास नमाज़ "सलाते हाजत" भी तालीम फरमाई है।

मशहूर सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफा रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जिस बन्दे को कोई हाजत और परेशानी हो उसे चाहिए कि वह खूब अच्छी तरह वुज़ू करे उसके बाद दो रकअत नफ़्ल पढ़े, उसके बाद अल्लाह तआला की हम्द व सना करे और उसके बाद नबी सल्ल0 पर दुरूद पढ़े फिर अल्लाह के हुज़ूर में इस तरह अर्ज करेः

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ ط
سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ط
وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط
اَسْئَالُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ
وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ
وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ
وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ
لَا تَدَعْ لِيْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ
وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ
وَلَا حَاجَةً هِيَ لَكَ رِضًا
اِلَّا قَضَيْتَهَا يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ○

तर्जमाः— अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह बड़ा ही इल्म वाला और बड़ा करीम है, पाक और मुक़द्दस है वह अल्लाह जो अ़र्शे अज़ीम का भी मालिक है, सारी हम्द व सताइश उस अल्लाह के लिए जो सारे जहानों का रब है, ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूं उन आमाल और उन अख़्लाक़ व अहवाल का जो तेरी रहमत का वसीला और तेरी मग्फिरत का पक्का जरीआ़ बने और तुझ से तालिब हूं हर नेकी से हिस्सा लेने का और हर गुनाह से सलामती और हिफाज़त का, खुदा वन्दा मेरे सारे ही गुनाह बख़्श दे और मेरी हर फिक्र और मेरी हर हाजत जिस से तू राजी हो उस को पूरा फरमा दे, ऐ अरहमर्राहिमीन, सब महरबानों से बड़े महरबान!"

लाखों बन्दगाने खुदा का तजरिबा है कि जब उन्होंने सलाते हाजत पढ़ कर इस तरीक़े से अल्लाह तआला से दुआ की तो अल्लाह तलाआ ने उन की हाजत पूरी फरमा दी और उन की परेशानी दूर कर दी, इस तजरिबा ही की बुन्याद पर उन बन्दगानें खुदा का यक़ीन है कि सलाते हाजत अल्लाह तआला के ग़ैबी खज़ानों की कुंजी है।

सलाते इस्तिख़ाराः-

हम सब को ऐसे मवाके आते हैं कि एक काम हम करना चाहते हैं लेकिन

उसके नतीजे और अन्ज़ाम के बारे में इतमीनान नहीं होता, ऐसे मौकों के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़े इस्तिख़ारा का यह तरीक़ा तालीम फरमाया है कि वह बन्दा पहले दो रकअ़त नफ़्ल पढ़े, उसके बाद अल्लाह तआला के हुजूर में इस तरह अर्ज करे:—

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَاَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ.
اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَيْرٌ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِيْ فَاقْدُرْهُ لِيْ وَيَسِّرْهُ لِيْ ثُمَّ بَارِكْ لِيْ فِيْهِ وَاِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِيْ فَاصْرِفْهُ عَنِّيْ وَاصْرِفْنِيْ عَنْهُ وَاقْدِرْ لِيَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ اَرْضِنِيْ بِهٖ

(رواه البخاری)

तर्जमाः— ''ऐ मेरे अल्लाह! मैं तुझ से तेरी सिफ़ते इल्म के वसीले से खैर और भलाई की रहनुमाई चाहता हूं और तेरी सिफते कुदरत के जरिये तुझ से कुदरत का तालिब हूं और तेरे अज़ीम फज़्ल की भीख मांगता हूं क्योंकि तू क़ादिरे मुतलक़ है और मैं बिल्कुल आजिज़ हूं और तू अलीमे कुल है और मैं हक़ाइक़ से बिल्कुल नावाकिफ हूं और तू सारे गैबों से बाखबर है, पस ऐ मेरे अल्लाह अगर तेरे इल्म में यह काम (उस काम का नाम ले) मेरे लिए बेहतर हो मेरे दीन, मेरी दुन्या और मेरी आखिरत के लिहाज से तो इस को तू मेरे लिए मुकद्दर कर दे और उसको मेरे लिए आसान कर दे, और फिर इस में मेरे लिए बरकत भी दे और अगर तेरे इल्म में यह काम (काम ध्यान में लाए) मेरे लिए बुरा है (और उसका नतीजा खराब निकलने वाला है) मेरे दीन, मेरी दुन्या और मेरी आखिरत के लिहाज़ से तो इस काम को मुझ से अलग रख, और मुझे इससे रोक दे और मेरे लिए खैर और भलाई को मुकद्दर फरमा दे वह जहां जिस काम में हो और फिर मुझे उस खैर वाले काम के साथ राजी और मुतमइन कर दे।

रावी का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फरमाया कि जिस काम के बारे में इस्तिखारा करने की जरूरत हो, इस्तिखारा की यह दुआ करते हुए सराहतन उसका नाम ले।

यह सलाते हाजत और सलाते इस्तिखारा अज़ीम तरीन नेअ़मत हैं जो इस उम्मत को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वास्ते से मिली है, अल्लाह तआला इन की कदरदानी और इनसे नफा उठाने की हम को तौफीक़ दे।

❖❖❖

पवित्र कुर्आन में

सुन लो! बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ है न ग़म, वह जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते हैं।

(सूर: यूनुस:६२,६३)

इस्लामिक पहचानों तथा मान्यताओं की सुरक्षा

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी —हिन्दी अनुवादः हुसैन अहमद

इस समय विश्व स्तर पर इस्लामिक पहचानों (तशख्खुस) तथा मान्यताओं (अक़्दार) को मिटा देने के प्रयास हो रहे हैं यह प्रयास गुप्त रूप से भी और खुल्लम खुल्ला भी हो रहे हैं मुसलमान संसार के किसी भी कोने में हों उनके साथ इस्लामिक विश्वास (अक़ीदा) और उसके अनुकूल कर्म हैं और वह सब परिवर्तन रहित इस्लामिक पहचानों के वाहक हैं इन्हीं विशेषताओं के साथ रहेंगे तो यह असहनीय होगा।

इसी आभास के कारण विश्वव्यापी शक्तियां इस्लाम और मुसलमानों से संबंधित सारे चिन्ह और पहचानें चाहे उन का संबंध विश्वास से हो अथवा साधारण जीवन से, मिटा देने के प्रयास में लगी हैं, उन्हें किसी प्रकार स्वीकार नहीं कि कोई भी इस्लामिक नियम, भौतिक दृष्टिकोणों तथा विचारों के समक्ष परवान चढ़े और मानव जगत के कल्याण का साधन बने, इस लिए कि यह उनकी स्वतंत्र सभ्यता के लिए आशंका तथा उनके नेतृत्व के लिए रुकावट है।

हमारे समाज में भी अनेक ऐसे गिरोह हैं, जो इस कार्य में सचेष्ट हैं और वह भी पश्चिम वालों का राग अलाप रहे हैं।

योरोप के विभिन्न देशों का तो यह हाल है कि वहां हलाल व हराम का अंतर ही समाप्त हो गया है और समाज में ऐसी स्वतंत्रता है जो पशुओं की स्वतंत्रता से भी आगे है नवयुवक लड़कों और लड़कियों में बे रोक टोक मिलाप, बाज़ारों और दुकानों में उनके द्वारा सामानों का खरीदना बेचना, होटलों और दूसरे सार्वजनिक स्थानों पर उन लड़कियों की सरलता से उपलब्धता, मदिरा तथा दूसरे मादक पादार्थों का खुल्लम खुल्ला प्रयोग, हराम माल की प्राप्ति, ब्याज का हर स्तर पर विज्ञापन, यह और इस प्रकार के दूसरे बहुत से कामों में अशलीलता को बढ़ावा दिया है, अपितु अशलीलता ही उन की सभ्यता बन गई है तथा धार्मिक प्रवृत्ति उनके मन मस्तिष्क से लुप्त हो चुकी है, पश्चिम वालों का राग अलापने वाले चाहते हैं कि मुसलमान भी इस विधर्मी सभ्यता में लत पत हो जाएं। इनशाअल्लाह अल्लाह के खास बन्दे विकृत सभ्यता पर ''लाहौल'' पढ़ेंगे। और उससे कोसों दूर रहेंगे और इस्लामी शिआ़रों को सुरक्षित रखेंगे।

इस्लाम दीने फितरत (प्राकृतिक धर्म) है तथा जीवन के हर पहलू को घेरे हुए है, अल्लाह तआला ने इस दीन को अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा समस्त मानव जाति को क़ियामत तक के लिए प्रदान किया अतएव हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

ने इस्लाम द्वारा संसार की पारस्परिक शत्रुता तथा मतभेदों आदि को समाप्त किया इस दीन ने संसार को शांति दी, न्याय दिया, सदाचारिता प्रदान की तथा उत्तम नैतिकता से सुसज्जित किया और इस्लाम एक संक्षिप्त समय में संसार के एक बड़े भाग पर बिना किसी रक्त पात के फैल गया, यह बात इस्लाम के अल्लाह तआला की तरफ से होने को सिद्ध करती है आरम्भ ही से इस दीन को ऐसे वाहक मिलते रहे जो दीन से पूर्णतः परिचित थे तथा उसके विरोधियों की चालों से अवगत थे उन्होंने इस्लाम के विश्वव्यापी संदेश उस की वैज्ञानिक तथा वैचारिक और मानवीय शिक्षाओं को संसार के समक्ष परस्तुत किया तथा वैज्ञानिक रचनाओं द्वारा सिद्ध किया कि इस्लाम किसी मानवीय मस्तिष्क से नहीं निकला है अपितु यह खुदाई दीन (ईश्वरीय धर्म) है। इस्लाम की दृष्टि में धनवान तथा निर्धन राजा तथा रंक सब समान हैं। उनमें अंतर आज्ञापालन तथा अवज्ञा के आधार पर है, अल्लाह तआला फरमाता है, अनुवादः ''जो अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करेगा तो अल्लाह तआला उन लोगों के साथ उसको एकत्र करेंगे जिन को उसने पुरस्कृत किया है अंबिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिहीन नीज वह कितने अच्छे साथी हैं।''

(अन्निसाः 69)

इस्लाम दुश्मन ताक़तों ने इस रब्बानी दीन (ईश्वरीय धर्म) को हिंसक तथा आतंकी दीन बताया, और इस्लाम को अपनी राह में रुकावट समझा अतः इस खुदाई दीन को बेकार बताया और प्रोपेगण्डा किया कि इस्लाम रक्तपात तथा लूटपाट पर उभारता है तथा उपद्रव और आशान्ति का आवाहक है उन्होंने इस दृष्टिकोण के वाहक भी तैयार कर दिए जो उनके दृष्टिकोंणों के प्रकाशन तथा प्रसारण में सक्रिय हैं और इस्लाम को अपने लिए खतरा समझते हैं।

बीसवीं सदी ईस्वी में कम्यूनिज़्म का सिद्धान्त एक समय तक आर्थिक समृद्धि का हरा बाग दिखाता रहा, और समानता का नारा लगा कर अपनी ओर आकर्षित करता रहा परन्तु शीघ्र ही इस की वास्तविकता लोगों के सामने आ गई और वहअपनी मौत मर गया और बुरी तरह असफल हुआ इस सिद्धांत में अल्लाह के बताए हुए विधान का विरोध किया था और अपने सिद्धांतों को खुदा समझता था प्रत्यक्ष है जब अल्लाह के विधान के विरुध विद्रोह किया जायेगा तो असफलता ही का मुंह देखना पड़ेगा भौतिक सिद्धांत के वाहक अपनी असफलता को अपने सिद्धांतों की असफलता नहीं मानते अपितु उसकी व्याख्या करते हैं तथा उसके दूसरे कारण खोजते हैं।

इस समय संसार के सामने इस्लाम का संपूर्ण परिचय परस्तुत करने की आवश्यकता है यह परिचय केवल कथनीय न हो अपितु व्यवहारिक भी हो, इस्लाम दुश्मन ताकतें हम को इस्लामी शरीअत से विमुख कर देना

चाहती हैं ऐसी दशा में इस्लामी तशख्खुश (इस्लामिक पहचान) और विशेषताओं (शरीअत) को पूर्णता ग्रहण करने की अत्यन्त आवश्यकता है। इस्लामी शरीअत में वह प्रकाश है जो कुफ्र के अंधेरों को तुरन्त दूर कर देता है, अल्लाह तआला का इरशाद है, अनुवादः ''क्या वह शख्स जो मुर्दा था, फिर हम ने उसको जिन्दगी दी, और उस को एक नूर अता किया, जिससे वह लोगों के दरमियान चलता फिरता है, उस शख्स की तरह हो सकता है, जो तारीकी में भटक रहा है''।

(अल अनआमः 122)

और एक दूसरी जगह अल्लाह तआला का इरशाद है अनुवादः ''और उन्हें यही हुक्म दिया गया है कि अल्लाह की इबादत करें, दीन को खालिस कर के और उसी के लिए यकसू हो कर और नमाज़ काइम करें और ज़कात दें, और यही सीधा दीन है।''

(अल–बय्यिनाः 5)

(तामीरे हयात 10 जुलाई 2018 से ग्रहीत अनुवाद संक्षेप के साथ)

❖❖❖

आदर्श शासक.....

अवस्था में इसे उचित न समझते थे कि सर्वसाधारण के मुक़ाबले में उन्हें किसी प्रकार की प्रधानता दी जाये।

साधारण रीति है कि लोग हाकिमों तथा बड़े लोगों के सम्मान हेतु खड़े हो जाते हैं। बादशाहों तथा रईसों का आदर तो इससे भी बढ़ कर किया जाता है। यहां तक कि लोग उनके आगे मस्तक तक टेक देते हैं और जब तक आदेश नहीं मिलता इसी अवस्था में पड़े रहते हैं। यह संसार की आम रीति थी लेकिन हज़रत उमर रज़ि0 की समताग्रस्त भावना इसे भी सहन न करती थी कि कोई सम्मान हेतु खड़ा हो जाये। लोगों को पीछे–पीछे चलने से भी मना करते थे और कहते थे कि इसमें अधिकारी के लिए आपद तथा अधीन के लिए अपमान है। एक बार किसी व्यक्ति ने बात–चीत के दौरान कहा– मैं आप पर कुर्बान हूं। परन्तु आपने फौरन टोका और कहा यह बुरी बात है इससे तुम्हारी आत्मा तिरस्कृत होगी।

❖❖❖

तक़्वा .....

जो शख्स गुनाहों से तौबा किये बिना मर जाए लेकिन ईमान रखता हो तो अल्लाह चाहेगा तो अपने करम से उसके गुनाह मुआ़फ कर देगा या अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सिफारिश से या किसी अल्लाह वाले की सिफारिश से या छोटे बच्चे जो बचपन में इन्तेक़ाल कर गये उनकी सिफारिश से उसके गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे या फिर अपने गुनाहों की सज़ा जहन्नम में भुगत कर जन्नत में प्रवेश पायेगा लेकिन जिसकी मौत कुफ्र (नास्तिकता) या शिर्क (अनेकेश्वरवाद) पर हुई होगी तो उसकी बख्शिश न होगी वह सदैव जहन्नम में जलेगा।

अल्लाह तआ़ला हम को अपनी राह पर चलने का सामर्थ्य दे और जब मौत आए तो ईमान पर मौत आए। आमीन!

❖❖❖

शहीद और शहीदों के क़ातिल

जो राहे ख़ुदा में हुए हैं शहीद
हुआ उन से राज़ी ख़ुदाए मजीद
वह जन्नत में पायेंगे अअ़ला मक़ाम
करेंगे फ़िरिश्ते उन्हें आ सलाम
मगर उनके क़ातिल तो वह हैं पलीद
जलेंगे जहन्नम में वह सब पलीद
सिवा उनके मक़्बूल तौबा हो जिन की
कि हब्शी सा क़ातिल हुआ है बिहिश्ती
दी उनको मुआ़फी थी प्यारे नबी ने
मगर हाज़िरी से था रोका नबी ने
नबी ने कहा सामने तू न आना
तू है उम्मती सामने पर न आना
तुझे देख कर ग़म मेरा ताज़ा होगा
चचा की जुदाई का ग़म ताज़ा होगा
सलाम और रहमत हो प्यारे नबी पर
सब अस्हाब पर और आले नबी पर

ईमान

उम्मीद हो ख़ुदा से और ख़ौफ हो ख़ुदा का
ईमान इस तरह हो हर बन्द-ए-ख़ुदा का
ईमान हो नबी पर और उनसे हो महब्बत
लाज़िम है उनकी ताअ़त, उनपे सलामो रहमत
सब आल पर भी उनकी अस्हाब पर भी या रब
अज़्वाज पर भी उकनी रहमत सदा हो या रब

❖❖❖

लाखों सलाम

ज़िन्दगी यह आरज़ी है
मौत आएगी ज़रूर
मुस्तक़िल जो ज़िन्दगी है
वह तो आएगी ज़रूर
उस में सुख जन्नत का है
या फिर है दोज़ख़ का अज़ाब
पैरो नबीये पाक का
जन्नत को पायेगा ज़रूर
हम रहें पैरो नबी के
और पढ़ें उन पर दुरूद
ख़ूब भेजें हम सलाम
ताकि राज़ी हो वदूद
हम पढ़ें जब भी दुरूद
बा अदब बा एहतिराम
हो तलब रहमत की उसमें
और हो उसमें सलाम
रहमतें या रब नबी पर
और हों लाखों सलाम
वह तो हैं महबूब तेरे
हैं वही ख़ैरुल अनाम
उनकी सारी आल पर
उनके सब अस्हाब पर
या मुहैमिन या सलाम
रहमतें उतरें मुदाम

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः निकाह का तरीक़ा क्या है? ज़माने की तब्दीली के साथ क्या निकाह के तरीक़े में तबदीली हो सकती है? वह कौन सी चीजें हैं जो अगर ज़माने की तब्दीली के साथ निकाह में शामिल की जाएं तो जाइज़ हों?

उत्तरः निकाह का सुन्नत तरीक़ा वह है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत फातिमातुज़्ज़ुहरा के निकाह में इख्तियार फरमाया था, इस का खुलासा अ़ल्लामा शिब्ली नोमानी रह0 ने सीरतुन्नबी में हस्बज़ेल अल्फाज़ में बयान फरमाया हैः—

''हज़रत अली रज़ि0 ने निकाह की ख्वाहिश जाहिर फरमाई तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम्हारे पास महर अदा करने को कुछ है? बोले ''एक घोड़ा और ज़िरा के सिवा कुछ नहीं'' आपने फरमाया ''घोड़ा तो जिहाद के लिए ज़रूरी है, ज़िरा को फरोख्त कर डालो'' हज़रत उस्मान रज़ि0 ने वह ज़िरा 480 दिरहम पर खरीदी और हज़रत अली रज़ि0 ने क़ीमत ला कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने रख दी, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ि0 को हुक्म दिया कि बाज़ार से खुश्बू लाएं, अक़्द हुआ और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जहेज़ में एक पलंग और एक बिस्तर दिया, ''इसाबा'' में लिखा है कि एक चादर, दो चक्कियां और एक मशक भी दी, निकाह के बाद रस्में अ़रूसी का वक़्त आया तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ि0 से कहा कि एक मकान ले लें, चुनांचे हारिस बिन नोमान का मकान मिला, और हज़रत फातिमा रज़ि0 के साथ इस में क़ियाम किया।''

(सीरतुन्नबीः 2/428)

निकाह में ऐसी चीजें शामिल करना जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, सहा—बए—किराम रज़ि0 और सलफे सालिह़ीन से साबित न हों, दुरुस्त नहीं है, मौजूदा दौर के रस्म व रवाज उमूमन दुरुस्त नहीं हैं।

प्रश्नः ज़ियादा मशहूर यह है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत फातिमा रज़ि0 का निकाह ह़ज़रत अली रज़ि0 से 400 मिस्काल चांदी महर पर किया था जब कि हज़रत अली ने अपनी ज़िरा 480 दिरहम में बेच कर महर में पेश की थी, सह़ीह़ क्या है?

उत्तरः यह सह़ीह़ लगता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत फातिमा रज़ि0 का निकाह़ ह़ज़रत अली रज़ि0 से 400 मिस्काल चांदी महर पर किया था महर की बाक़ी रक़म हज़रत अली रज़ि0 ने बाद में अदा की होगी। इसलिए कि 400 मिस्क़ाल चाँदी 572 दिरहम के बराबर होती है।

प्रश्नः क्या शादी में वालिदैन की रज़ामन्दी ज़रूरी है? अगर लड़का और लड़की अपनी पसन्द से निकाह कर लें और वालिदैन राज़ी न हों तो क्या इस्लामी शरीअत में निकाह हो जाएगा?

उत्तरः औलाद का निकाह करते वक़्त वालिदैन को हुक्म है कि औलाद के जज़बात और ख्वाहिश को तरजीह दें और औलाद के हक़ में बेहतर यह है कि वालिदैन की ख्वाहिश और रज़ामन्दी की रिआयत करें और अपनी ख्वाहिश और राय पर वालिदैन की सवाबेदीद को तरजीह दें क्योंकि उनको तजरिबा ज़ियादा और उनकी शफक़त कामिल है जिस में ख़ैर व फलाह की उम्मीद ज़ियादा है लेकिन इसके बावजूद अगर बालिग़ औलाद वालिदैन की रज़ामन्दी के बगैर ऐसा रिश्ता कर लें जिसमें वालिदैन की इज़्ज़त व नामूस पर असर न पड़े तो इस्लामी शरीअ़त में यह निकाह दुरुस्त हो जाएगा।

(अल–बहरुर्राइकः 2/121)

प्रश्नः आज कल अगर कोई औरत किसी नेक मोमिन मर्द से निकाह की ख्वाहिश रखे तो क्या यह कोई बुरी चीज़ तो नहीं है और अपनी ख्वाहिश जाहिर करे तो वालिदैन से कैसे जाहिर करे बिल्खुसूस इस सूरत में जब कि नेक मर्द से निकाह की ख़्वाहिश ज़ाहिर करने में वालिदैन या भाई अपनी इज़्ज़त व वक़ार का मसअला बना लें, ऐसी सूरते हाल में औरत क्या करे?

उत्तरः नेक मोमिन मर्द से निकाह की ख़्वाहिश जाहिर करना बुरा नहीं है और न कोई ऐब है, हज़रत ख़दीजा रज़ि0 ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नेकी देख कर निकाह की ख़्वाहिश जाहिर की थी, जब कि वह कुरैश के आला खान्दान की आला दर्जे की खातून थीं, हां! औरत को चाहिए कि नेकी पहचानने में धोखे से बचने के लिए किसी जरिये मसलन सहेलियों के जरिये अपनी ख्वाहिश अपने वालिदैन या वालिदा से वाजेह करे और वालिदैन अपने तजरिबात और मालूमात की रोशनी में फैसला करें और अपनी इज़्ज़त का मसला बनानेके बजाए अपनी बच्ची के मुस्तक्बिल और नुक–तए–नज़र की रिआयत करें, ताहम लड़की के लिए अपने वालिदैन की रज़ामन्दी ही में खैर और मुस्तक़बिल में भलाई है, ह़दीसे नबवी में वालिदैन की इताअत ही में खैर की रहनुमाई की गई है।

(मिश्कातः 421)

प्रश्नः क्या टेलीफोन या इंटरनेट या वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये निकाह हो सकता है?

उत्तरः इस्लामी निकाह के लिए यह जरूरी है कि इजाब व क़बूल मज्लिसे अक़्द में गवाहों के सामने हो टेलीफोन या इण्टरनेट या वीडियो कांफ्रेंसिग से यह मुम्मिकन नहीं अल्बत्ता जवाज़ की यह शक्ल इख्तियार की जा सकती है कि लड़का टेलीफोन या किसी ज़रिये से किसी आ़क़िल बालिग़ मुसलमान को अपनी तरफ से निकाह का वकील बना दे और वह वकील मजलिस में उसकी तरफ से इजाब व क़बूल करे, इस तरह निकाह हो जाएगा खुद लड़के से टेलीफोन पर इजाब व क़बूल कराने से निकाह नहीं होगा।

(अल–बहरुर्राइकः 3/83)

❖❖❖

गैर मुस्लिम जगत के सामने इस्लाम का उज्जवल तथा आकर्षक रूप प्रस्तुत करने की आवश्यकता

—हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —हिन्दी अनुवाद— हुसैन अहमद

आज यूरोप अपनी काम इच्छाओं के समुद्र में डूब चुका है अधिकांश धार्मिक तथा मानवीय प्रतिबन्धों से स्वतंत्र हो कर नैतिक नीचता तथा पशुता में जा पड़ा है उस को इस समय ऐसे चमत्कारी महा पुरुष की आवश्यकता है जो उसे नीचता तथा पशुता की परिस्थिति से उबार सके आज की मसीही दुन्या अपनी धर्म विरोधी भौतिक व्यवस्था से ऊब चुकी है। इसलिए कि वह स्वार्थ रहित मानवीय भावनाओं से वंचित है तथा मसीही धर्म से उस का सम्पर्क नाम मात्र का रह गया है। अतः इसमें अब किसी धार्मिक रिक्त को भरने की योग्यता बिल्कुल नहीं रही, अतः चकित तथा व्याकुल मसीही जगत किसी सत्य धर्म की खोज में है जो उसे जीवन की भूल भुलय्यों से निकाल कर गंतव्य का शुद्ध पथ प्रदर्शन करे और इस कार्य की योग्यता सत्य धर्म इस्लाम के अतिरिक्त और किसी धर्म में नहीं रही।

परन्तु आज कल हमारे कुछ लोग इस्लाम को गैरों के सामने संवेदना, सहानुभूति मानवीय मित्रता से हट कर स्वार्थपरता तथा घृणा के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं और जब तक हम इस्लाम का रूप वैमनस्य, घृणा तथा शत्रुता के रूप में प्रस्तुत करते रहेंगे उस समय तक गैरों का स्वाभाव इस्लाम के प्रति विमुखता तथा घृणा के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता।

ऐसी परिस्थिति में आवश्यकता है कि हम इस्लाम को गैरों के सामने एक ऐसे दीन के रूप में प्रस्तुत करें जो मसीही दुन्या को उसकी वर्तमान सामूहिक नैतिक पतन से छुटकारा दिलाए इसलिए कि अब सारा मसीही संसार भौतिकता से ऊब चुका है और उस से स्थाई छुटकारा चाहता है अतएव संसार अपनी इन जटिल समस्याओं के समाधान में विक्षिप्त तथा व्याकुल है।

अतः यदि ऐसी दशा में गैर मुस्लिम दुन्या के सामने इस्लाम का उज्जवल मुखड़ा विदित नहीं किया गया तो फिर मुसलमान गैरों को इस्लाम की ओर आकृष्ट करने में सफल नहीं हो सकते और यह भौतिक का संसार अपनी स्वार्थी गतिविधियों के साथ भटकता तथा ठोकरें खाता फिरेगा।

अतः मुस्लिम आवाहकों तथा धर्म प्रचारकों का कर्तव्य है कि वह इस्लामी दावत (इस्लाम प्रसारण) के लिए उचित तथा प्रभावकारी विधियां अपनाएं इस लिए कि दावत का समस्त उत्तरदायित्व उन्हीं के सिर है।

माना कि पश्चिम ने खूब उन्नति की, राजनीतिक तथा आर्थिक व्यवस्था, सैनिक शक्ति, आर्थिक साधनों तथा नागरिकता की उन्नति में उच्चतर स्थान पर पहुंच

चुका और उनके द्वारा अपनी कठिनाइयों का समाधान करने तथा आंतरिक व्याकुलता को दूर करने का भर पूर प्रयास किया परन्तु उसका हर प्रयास विफल रहा आज पश्चिमी युवकों का हाल यह है कि वह अपनी समस्याओं के समाधान की खोज में भटकता फिर रहा है तथा अपने हर प्रयास में असफल हो रहा है जिस गिरी हुई नैतिकता और मांसिक तनाव के आज पश्चिमी युवक शिकार हैं यह उस के स्वतंत्र समाज का परिणाम है जो नैतिक तथा धार्मिक प्रतिबंधों से पूर्णतः स्वतंत्र है और यह उनकी बीमारी की अस्ल जड़ है, ऐसे में पश्चिम के सामने केवल एक ही मार्ग है वह यह है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम की शिक्षाओं और विशेष कर खातिमुर्रुसुल (जिस पर रिसालत खत्म हुई) अर्थात अंतिम नबी हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत को स्वीकार करें, जिन की शिक्षा यह है कि जगत के निर्माता से संबंध जोड़ा जाए जिन की दावत यह है कि संतुलन तथा मध्यता का जीवन अपनाया जाए और जिन का दृष्टिकोण यह है कि विश्राम सामग्री तथा जीवन सामग्री पर टूट न पड़ा जाए और न ही सन्यास अपना कर जीवन की आवश्यकताओं से मुंह मोड़ लिया जाए।

आज पश्चिमी अपने वर्तमान औद्योगिक तथा राजनैतिक व्यवस्था को छोड़ कर नवीन व्यवस्था की इच्छा नहीं रखता, इसलिए कि उसने उच्चकोट की जीवन व्यवस्थाओंका अनुभव प्राप्त किया है और उसका ज्ञान तथा उसका शोद्व तथा बुद्धि अन्तिम चरणों तक पहुंच चुकी है वह किसी नवीन भौतिक व्यवस्था का इच्छुक नहीं इसलिए कि उसको किसी नवीन भौतिक व्यवस्था में अपनी समस्याओं का समाधान नज़र नहीं आता, आज तो पश्चिम को हार्दिक संतोष तथा हार्दिक शांति की खोज है जिससे उनकी व्यवस्था दीवालिया हो चुकी है। हो सकता है कि वह शुद्ध इस्लाम से प्रभावित हों।

नोटः यद्यपि यह लेख हज़रत मौलाना ने यूरोप के हालात को सामने रखते हुए यूरोप के मुसलामनों विशेष कर मुस्लिम दाइयों के लिए लिखा है परन्तु इस लेख में सारे संसार के मुसलमानों के लिए सबक है मुख्य रूप से यह लेख भारत के मुसलमानों और यहां के इस्लाम गुरूजनों विशेष कर इस्लाम धर्म के प्रचारकों के लिए है यहां के इस्लाम धर्म के प्रचारकों तथा सभी मुसलमानों के लिए आवश्यक है कि वह अपने वतनी भाईयों के सामने इस्लाम का सच उज्जवल तथा आकर्षक रूप में विदित करके उनके मन में इस्लाम का आदर पैदा करें। और याद रखें कि जिस को अल्लाह हिदायत दे उसको कोई भटका नहीं सकता और जिस को अल्लाह हिदायत न दे उसको कोई हिदायत नहीं दे सकता।

❖❖❖

पड़ोसी का हक़

—नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

हज़रत मालिक बिन दीनार रह0 बड़े अल्लाह वाले गुज़रे हैं। एक बार उन्हें किराये पर मकान लेने की ज़रूरत पड़ी। अपने लोगों से कहलवाया, खोजबीन करवाने पर एक पसन्द आया और रहने लगे। कुछ ही दिन गुज़रे थे कि उन्हें पता चला कि यहां रहना बड़ा मुश्किल है। दरअस्ल उनका एक पड़ोसी यहूदी था उसे अच्छा न मालूम हुआ कि कोई अल्लाह वाला पड़ोसी बन कर आराम से रहे। लगा नित नये—नये ढंग से परेशान करने। पहले तो उनके घर से सटे शौचालय बनवाया, फिर उसकी गंदगी मालिक रह0 के घर के सामने डालने लगा ताकि तंग आकर यहां से भाग खड़े हों।

इस्लाम में पड़ोसियों को बड़ा सम्मान दिया गया है, उनके प्रति क्या—क्या कर्तव्य हैं, विस्तार से बताया गया है। अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया कि "मुझे हज़रत जिब्रील अलै0 ने पड़ोसी के अधिकार के प्रति इतनी ताकीद की कि मैं समझा की कहीं उनको विरासत का हक़ न दिला दें।

(बुखारी)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ही दौर का एक दिलचस्प किस्सा है। एक सहाबी ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में पहुंच कर अपने पड़ोसी की शिकायत की। आदेश मिला संयम रखो। उन सहाबी का पड़ोसी इस सब्र पर भी न शरमाया और लगातार सताता रहा। दूसरी बार शिकायत की तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फिर सब्र का हुक्म सुनाया, लेकिन दूसरी ओर कोई बदलाव नहीं। अब तीसरी बार शिकायत की तो आदेश मिला, अपने घर का सामान रास्ते में डाल दो। उन सहाबी ने ऐसा ही किया। आने—जाने वालों ने पूछा क्या बात है? उन्होंने पूरा हाल कह सुनाया। सब ने उनके पड़ोसी को खूब बुरा भला कहा। ये देख कर प्रताड़ित करने वाला पड़ोसी इतना लज्जित हुआ कि उन्हें मना कर फिर घर में वापस लाया और वादा किया कि अब आगे वह ऐसा नहीं करेगा।

है ना दिलचस्प किस्सा। ये जो गांधी गीरी और अपने हक को मनवाने का जो अहिंसक रास्ता है वह इस्लाम ही की देन है। इस्लाम ने बताया है कि सब्र और हिम्मत के साथ अपनी बात कहते रहो एक दिन आएगा कि सच सब पर भारी होगा।

खैर! बात मालिक बिन दीनार रह0 की हो रही थी कि उनका पड़ोसी उनके घर के सामने गन्दगी डालने लगा। मन ही मन खुश होने लगा कि चलो अब ये यहां ज़ियादा दिन के मेहमान

नहीं हैं। लेकिन हज़रत मालिक रह0 को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान याद था, इसलिए कभी कुछ न कहा।

एक दिन संयोग से उस यहूदी पड़ोसी से भेंट हो गई। यहूदी ने पूछा, कैसी कट रही है? कहा, अल्लाह का शुक्र है। उसने पूछा, मेरे कारण कोई परेशानी तो नहीं है? कहा, परेशानी तो है, यहूदी ने फिर पूछा, गन्दगी का क्या करते हैं? कहा एक फावड़ा और तगाड़ी (तस्ला) खरीद लिया है, उसी से उठा कर दूर फेंक आता हूं। यहूदी ने ढिठाई से पूछा ऐसा क्यों करते हैं? कहा, बस अल्लाह और उसके रसूल का यही आदेश है।

यहूदी उस समय मुँह से तो कुछ न बोला, मगर अन्दर ही अन्दर बड़ा शर्मिन्दा हुआ और जुल्म व ज़ियादती छोड़ बैठा। अल्लाह का करना हुआ कि कुछ दिनों बाद ही वह हज़रत मालिक बिन दीनार रह0 के व्यवहार से इतना प्रभावित हुआ कि इस्लाम ले आया।

सचमुच ये दुन्या हज़रत मालिक बिन दीनार रह0 जैसे लोगों से कायम है, अन्यथा लोगों के कृत्य तो कहीं से भी दुन्या के स्थिर रहने का कारण नहीं ।

एक जगह पड़ोसी से सम्बन्धित दिलचस्प कमेंट पढ़ा था कि ''फेसबुक और ट्विटर पर हज़रत दोस्त हैं मगर पड़ोसियों से बोल चाल बन्द हैं। बहुतेरे स्थानों पर तो पड़ोसियों से जान–पहचान तक नहीं है। महानगरों में तो ये स्थिति और भी भयावह है। उन्हें पता ही नहीं है कि हमारे पड़ोस में कौन भूखा सोता है, कौन नंगे बदन है, कौन बीमार है, मगर इस्लाम इसके प्रति बड़ा ही सचेत है, पवित्र हदीस में है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, ''मोमिन मुसलमान वह नहीं जो स्वयं पेट भर कर खाए और उसका पड़ोसी उसके बगल भूखा रहे।''

(मिश्कात)

दूसरी जगह है:– हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''तुम में कोई मोमिन न होगा जब तक अपने पड़ोसी के लिए वही व्यवहार न रखे जो स्वयं अपनी जान के लिए रखता है। (मुस्लिम)

इस प्रकार की कई हदीसें हैं और पवित्र कुर्आन में भी इस विषय में वर्णन मिलता है जिसमें पड़ोसियों के अधिकार के प्रति मुसलमानों को चेताया गया है। इसमें मुस्लिम और गैर मुस्लिम का कोई भेद नहीं है। पड़ोसी किसी भी धर्म व समुदाय का हो उसका हक़ देना होगा जो न दे वह मोमिन नहीं है।

आवश्यकता है कि एक पड़ोसी का अपने दूसरे पड़ोसी के प्रति क्या अधिकार हैं, के लिए कैम्पेन चलाई जाए, एक दूसरे के सुख–दुख में शामिल होने की भावना पैदा की जाए। यदि सचमुच ऐसा होता है तो एक सभ्य समाज की कल्पना दूर की कौड़ी न रह जाएगी। इन्शा अल्लाह।

❖❖❖

तुर्की और इस्लामी बेदारी

—हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
—हिन्दी लिपि— राशिदा नूरी

एक हों मुस्लिम हरम की पास्बानी के लिए
नील के साहिल से ले कर ता—ब—ख़ाके काशग़र

यह शेअ़र इस्लामी हमीयत से भरपूर दिल रखने वाले शाइरे मश्रिक़ डॉ0 मुहम्मद इक़्बाल ने उस वक़्त कहा था जब मसीही यूरोप के मुल्कों की रेशादवानियों (साजिशों) और इस्लाम दुश्मनियों के असर से हरमैन शरीफैन का इलाक़ा अपने तुर्क मुहाफिजों के हाथों से निकलने जा रहा था जब कि कई सदियों से वह तुर्कों की पुरशिकोह सलतनत के ज़ेरे हिफाज़त था।

एक तरफ यूरोप के मुमालिक सलीबी जंगों का इन्तिक़ाम तुर्कों से खासतौर पर और अरब के मुसलमानों से आमतौर पर लेना चाहते थे और उसके लिए बराहेरास्त तदबीर इख़्तियार करने के बजाये मुस्लिम मुल्कों में तफ़रिक़ा पैदा करके और नस्ली व लिसानी अ़सबियतें उभार कर मुसलमानों की मुत्तहिदा ताक़त को पारा पारा कर देना चाहते थे।

यूरोप के पास इसका सबसे बड़ा ज़रीआ़ मुसलमान मुल्कों को इल्मी मैदान में पसमांदगी और इक्तिसादी मैदान में बदहाली थी, जिससे फायदा उठा कर यूरोप और खासतौर पर बर्तानिया ने अपने इस्तेअ़मारी मनसूबा के तहत मुसलमान मुल्कों में अपने असरात बढ़ाने और वहीं की आबादी से अपने मतलब के आदमी चुनने और उनके जरीए तबाहकुन तब्दीली लाने की कोशिश की।

यूरोप के रेशादवानियों से बिलआखिर तुर्की में फिर आलमे इस्लाम में, इस्लाम से बेएअ़तिनाई बल्कि मुखासिमत की फज़ा बनी और ऐसा महसूस होने लगा कि इस्लाम का अब चल चलाव है और मुसलमानों की यह मिल्लत जिसने दुन्या में अकेले सबसे बड़ी ताक़त और शानदार तमद्दुनी व इल्मी क़ियादत की हामिल उम्मत की शक्ल में छह सात सदियां गुज़ारी हैं, अब सिर्फ एक पसमान्दह और ज़वाल गिरिफ़्तः कौम बन कर रह जायेगी और यूरोपियन अक़्वाम के सामने उसको सिर्फ खादिमाना और ताबेअ़दाराना किरदार अदा करना होगा और दुन्यावी तौर पर मफलूकुलहाल और कासाएगदाई करने वाली क़ौम की हैसियत से रहना होगा, यह एक दर्दनाक एहसास था जिसने गैरतमन्द मुसलमान मुफक्किरीन को बेताब बनाया जिसकी ग़म्माज़ी हस्बेज़ेल शेअ़र करता है—

मराकश जा चुका फारस गया
अब देखना यह है
कि जीता है ये टर्की का
मरीज़े सख़्त जां कब तक

तुर्की का सख़्त जान मरीज़ जां—ब—लब हो चुका था और आसार अच्छे न थे लेकिन खुदा की कुदरत व हिकमत के सामने सब हेच है, वह मरे मुर्दे को ज़िन्दा कर सकता है चुनांचि हालात ने करवट लेना शुरु किया और तुर्की का करीबुल मर्ग मरीज़ सेहत की तरफ माइल होता नज़र आने लगा।

तुर्की जहां मुस्तफ़ा कमाल की कोशिशों से इस्लामी तशख्खुस को बिल्कुल ख़त्म कर दिया गया था, अरबी जुबान और इस्लामी सक़ाफत पर सख़्त पाबन्दी लगा दी गयी थी और कई दहाइयों की कोशिश से तुर्की क़ौम की इस्लामी वज़अ़ व अत्वार ख़त्म कर दिये गये थे और जहां अज़ान अरबी में ख़त्म और नमाज़ व दीनदारी नापसन्दीदा बना दी गयी थी, अब फिर इस्लाम से तअल्लुक़ और इस्लामी शआ़एर से दिलचस्पी का आग़ाज़ हो गया, और अपने को मुसलमान कहने और समझने में झिझक ख़त्म होती नज़र आ रही है। हुकूमत में ओहदे दार तक इस्लाम से रब्त जाहिर करने में ऐब महसूस नहीं करते, इस्लाम पसन्दों की तादाद इस हद तक पहुंच गई है कि उनके वोटों ने इस्लाम पसन्द काइद के लिए हुकूमत का सरबराह बनने की राह हमवार कर दी और इस तरह तुर्की का ये मरीज़े सख़्त जान फिर सेहत व जिन्दगी की तरफ लौटता हुआ नज़र आता है। अगस्त 1996 ई0 के दूसरे हफ़्ते में स्तन्बोल में राब्ता अदबे इस्लामी की कांफ्रेन्स थी, इस कान्फ्रेंस को न सिर्फ ये कि तुर्की के इस बैनुल अक़वामी शहर में मुनअ़क़िद करने की गुंजाइश निकली बल्कि शहर के इन्तिज़ामिया ने तआ़वुन किया, और सदर कान्फ्रेंस मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी का अलाहेदह से अपनी सरकरदगी में कार्पोरेशन हाल में बाक़ायदा ख़िताब भी रखा जिसमें तुर्की के दानिशवरों को मदऊ किया और शायाने शान तरीक़ा से जलसे का इन्इक़ाद किया तुर्की के नये हालात में फज़ा बदली हुई मिली और उसका साबका मुल्हिदाना किरदार टूटता नज़र आया जो आज से क़ब्ल के हालात में छाया हुआ नज़र आता रहा है।

तुर्की आ़लमे इस्लाम का धड़कता हुआ दिल रहा है, इस धड़कते हुए दिल को यूरोप की इस्लाम दुशमनी व सियहकारियों ने मुर्दा बनाने की कामयाब कोशिश की थी लेकिन अब हालात पलट रहे हैं आलमें इस्लाम के ज़वाल व तबाही का अलमिया गुज़िशता दो सदियों से शुरु हो गया था लेकिन मौजूदा सदी की दूसरी दहाई के इख़्तिताम पर इसको दो शदीद धक्के पहुंचे थे एक तो पूरे एशिया पर रूसी कम्यूनिस्ट इस्तिबदाद का ग़ल्बा और दूसरे तुर्की में ख़िलाफते उस्मानिया का इल्ग़ा (निरस्त करना) और इस्लाम दुशमन निज़ाम का इसरार, आलमे इस्लाम के ये दोनों इलाक़े मुसलमानों की ताक़त और वज़ाहत के मरकज़ रहे थे और गुज़िशता सदियों में इन के ज़रिए दुन्या में मुसलमानों की धाक बैठी हुई थी, वस्त एशिया में खास तौर पर समरकन्द व बुखारा मुसलमानों की दमकती हुई अज़मत का निशाना रहे थे। वहीं से आ कर मुगल नस्ल के मुस्लिम क़ाइदीन बर्रे सग़ीर के वसीअ़ इलाकों के हुकमरां और बर्रे सग़ीर में मुसलमानों की क़ुव्वत व शानो शौकत के निगहबान थे इसी इलाक़े के मशहूर तमद्दुनी मरकज़ बुखारा, समरकन्द, ताशकन्द, फरग़ाना वग़ैरह से जो

इस्लामी तहजीब व सतवत उभरी थी वह देहली, हैदराबाद, लाहौर और बर्रे सग़ीर के दीगर खित्तों में भी नुमायां हुई और बर्रे सग़ीर की मुस्लिम तहज़ीब बनी और उस से बर्रे सगीर की मुस्लिम तारीख को एक मक़ाम मिला जो 1857 ई0 तक इसी तरह क़ाइम रहे, बिल आख़िर उस की सियासी अज़मत को बरतानी इस्तेअ़मार ने बराहे रास्त फौजी कार्यवाईयों के ज़रिए ख़ात्म किया, और उसके साठ साल बाद 1917 ई0 और 1923 ई0 के दरमियान समरकन्द, बुख़ारा व तुर्किस्तानी इलाक़ों की इस्लामी सतवत व इज़्ज़त को इसी इस्तिबदाद ने कुचल डाला, फिर इसी मुद्दत के दौरान बरतानिया की इस्तेअ़मारी डिप्लोमेसी के जेरे सरकरदगी तुर्की के आज़ाद रविश क़ाइद मुस्तफ़ा कमाल ने ख़िालाफ़ते उस्मानिया को ख़त्म करते हुए तुर्की की इस्लामी और अरबी खुसूसियत को ख़त्म कर दिया, बिलआखिर मौजूदा चीनी तुर्किस्तान के क़ियामे काशगर से लेकर यूरोप के जुनूब व मशरिक़ में इस्लामी अज़मत के निशान कुस्तुनतुनिया तक जवां मर्द तातार व तुर्क मुसलमानों का सारा इलाका कुफ्र व इल्हाद और इस्लाम दुशमनी के इस्तिब्दाद के ज़ेरे असर चला गया और तुर्की के इस्लामी वक़ार के खात्मा के साथ साथ अरब मुमालिक का पूरा इलाक़ा तुर्की की सरपरस्ती व हिफ़ाजत से महरूम हो गया। मसीही यूरोप की सक़ाफती रेशादवानियों और सियासी साजिशों का शिकार बनाया और उसमें नस्ल परस्ताना जाहिलीयत के बीज बो दिये, चुनांचे अरब इलाकों का इत्तेहाद अरब कौमीयत के झण्डे के तहत मिस्री, शामी, जज़ाइरी, सूडानी, इराक़ी हिजाज़ी टुकड़ों में तक़्सीम हो गया, दूसरी तरफ तुर्किस्तानी इलाकों में कम्यूनिस्ट पर उसने तातारी नस्लों के अलग अलग घरौंदे कम अज़ कम 6 की तादाद में पहले से ही बना दिये थे और तुर्की में तहरीकनवाज़ क़ाइद ने तूरानी कौमियत की सदाए बेलगाम का बोल बाला क़ाइम कर दिया था, इस तरह देखते देखते मसीही यूरोप का वह सदियों का ख्वाब पूरा हो गया जो दुन्या ए इस्लाम में फैली हुई उम्मते इस्लामिया की वहदत को पारा पारा देखने पर मुश्तमिल था, और जिस के रू से मुसलमानों के एक बड़े तब्क़े के ज़ेहनों से इस्लाम से मुख्लिसाना वफादारी का चलन खत्म होता जा रहा था, इस तरह मिल्लते इस्लामिया की वह लड़ाई जो मुसलमानों की मुख़्तलिफ व भांति–भांति की नस्ली व लिसानी वहदतों को पिरोये हुए थी, टूट गयी, ईरान की ताक़त का बड़ा मरकज़ ख़िलाफते उस्मानिया खत्म हो गया, अरब तो फिर भी अरब थे लेकिन तूरानी व तातारी मुसलमानों के पास उनकी इस्लाम से वफादारी का कोई मुहर्रिक बाक़ी न रहा, वहां के हुक्मरानों ने अपने मग़रिबी आक़ाओं के इशारों से फिर जो चाहा किया, तुर्किस्तानी इलाक़ों में नस्ली बुन्याद पर तक्सीम किये हुए मुस्लिम इलाकों के माबैन नस्ली लड़ाईयां हुईं, लिसानी बुन्याद पर इन्तिशार व तफरिक़ा बढ़ा, इस्लामी शिआ़र मिटाये गये, मस्जिदें

म्यूज़ियमों में, थिएटरों में या जराअ़ती गोदामों में तब्दील की गयीं, अरबी और दीनी तालीम की मामूली कोशिशों को भी सख़्ती से रोका गया, इबादत व नमाज़ में वक़्त सर्फ करने को अपने मोहकमों के कामों में रुकावट क़रार दे कर रोका गया।

फिर मज़हबी पाबन्दी के खिलाफ़ मुहिम चलाने के लिए कमेटियां बनाई गयीं, जिन्होंने इत्तिहाद इख्तियार करने की पूरी तलक़ीन व तरग़ीब दी, इन हालात में 7 दहाइयां गुज़रीं और उनकी तारीक फज़ाओं में तीन नस्लें गुज़रीं जिनके ज़ेहनों से बतदरीज उनकी इस्लामी रिवायाते माज़ी को मिटाया गया।

लेकिन उसके बाद जो बात इस्लाम के हक़ में गई वह थी रूसी इक्तिदार की तरफ से मुसलमानों को जबरदस्ती अपने में तब्दीली लाने के लिए जब्र व क़हर, उस से जो रद्दे अ़मल हुआ, उसने मुसलमानों के दिलों में अपने इस्लामी माज़ी से हमदर्दी और दिलचस्पी को उभारा, चुनांचे रूसी तसल्लुत जब इक़्तिसादी बदहाली की वजह से टूटा और रूसी सूबों को आज़ादी की सांस लेने का मौक़ा मिला तो मुसलमानों में अपने माज़ी को याद करने और इस्लाम से दिलचस्पी लेने का जज़्बा उभर आया और नई मस्जिदें बनने लगीं, दूसरे मुस्लिम मुमालिक से दाई और उलमा भी आने जाने लगे और इस्लामी बेदारी तेज़ी से शुरु होने लगी।

तुर्की के साथ भी यही हुआ कि मुसतफा कमाल ने बहैसियत फौजी क़ाइद के जंग में कामयाबी हासिल करके वाहिद लीडर की हैसियत हासिल कर ली थी, उसके रसूख व असर के ज़रिए इस्लामी खुसूसियात मिटाने में मदद ली, तुर्की टोपी पहनने को जुर्म क़रार दिया, इस्लामी अज़ान अर्बी में देने की मुमानिअ़त कर दी, इस्लामी व अरबी तअ़लीम की इजाज़त मनसूख कर दी, औरतों के लिए परदे को जुर्म क़रार दिया, लिबास की मशरुईयत ख़त्म करके मग़रिबी लिबास लाज़मी क़रार दे दिया, और उन अहकामात की ख़िलाफ वर्ज़ी पर सख़्त सज़ायें दीं, मुलहिदो की हिम्मत अफजाई की, तहज़ीब व तमद्दुन व जुबान सब मग़रिबी मिज़ाज व रंग का माक़ब्ल इस्लाम के तुर्की की जाहिलाना रस्म व रवाज अपनाने के लिए हर तरह के हुकूमती वसाइल इख्तियार किये, चुनांचे देखते देखते तुर्की यूरोप के किसी दीगर मुल्क की तरह हो कर रह गया, और आलमे इस्लाम से उसका रिश्ता बिल्कुल कट गया, सक़ाफत व रस्मो रवाज को मगरिबी बनाने की मेहनत में वह मुल्क व वतन को मुनासिब पैमाने पर तरक़्क़ी देने से भी क़ासिर रहा, इस तरह वह यूरोप का एक ताबेअ़ और मोहताज मुल्क बन कर रह गया, और वहां यूरोप का मुआ़निदे इस्लाम ख्वाब पूरा हुआ।

लेकिन वहां भी जो बात इस्लाम के हक़ में गई वह थी बल्ग़ारिया में तुर्क मुसलमानों के साथ ईसाई हुकूमत और जर्मन में तुर्क मुस्लिम अक़ल्लियत के साथ ईसाई हुकूमत ने जो ज़ियादतियां कीं और बोसनिया

में तुर्की के हिमायत याफ़्ता मुसलमानों के साथ सिर्फ ईसाईयों ने क़त्ल व दरिन्दगी का जो बाज़ार गर्म किया, फिर चेचन्निया के मुसलमानों के साथ जो कि तुर्कों के नस्ली भाई हैं, ईसाईयत नवाज़ रूस ने जो सख़्त तशद्दुद व गारत गरी मचाई, इन बातों से तुर्क मुसलामनों के खून को गर्म और इस्लाम से उनकी हमदर्दी को बेदार कर दिया और इस्लामी उख़ूवत के तअ़ल्लुक़ को उभार दिया।

दूसरी तरफ तुर्क हुकूमत के बाज सरबराहों ने तुर्कों को हिफ़्ज़ेकुर्आन और नमाज़ के इमाम व मुअज़्ज़िन की ज़रूरत पूरी करने के लिए तालीमगाह क़ाइम करने की इजाज़त दी तो उसके ज़रीए तुर्कों में इस्लाम और शरीअ़ते इस्लाम से वाक़िफीयत हासिल करके सैकड़ों अफराद तैयार हो कर इस्लाम से जदीद तुर्की नस्ल के तअ़ल्लुक़ को बढ़ाने का बाइस बने, फिर उसी दौर में इस्लामी सहाफत व लिट्रेचर ने भी अपना काम किया, और इस्लाम दुश्मन मग़रिब की मक्कारी और जुल्म को आशकारा किया।

बहरहाल सदी की आख़री दो दहाइयों में पूरे आलमे इस्लाम में यूरोप से नफरत और यूरोप की ईसाई असबीयत और इस्तेमारी ज़ियादती से नाराज़ी फैली और ख़ासतौर पर नौजवानों में अपने शानदार माज़ी की याद और यूरोप के इस्तिबदाद से नागवारी आ़म हो गयी, और यह बात उस पूरे इलाक़े में इस्लामी बेदारी का सबब बन गयी, इसके नतीजे में हालात में गैरमामूली तब्दीली आई और मुसलमान मुल्कों का आपस में तआवुन की ज़रूरत का एहसास पैदा होने लगा, और सब को यह नज़र आने लगा कि हम सब का माज़ी एक है, और हम सब का दुश्मन भी एक है, जिसकी वजह से हम सबके मसाइल भी एक जैसे हैं और हम सब को जो ताक़त मुत्तहिद और बाइज्ज़त बना सकती है, वह इस्लाम है।

लेकिन आलमे इस्लाम के मुल्कों के हुकमरां अब भी यूरोप की सरपरस्ती से आज़ाद नहीं हो सके हैं या यूरोप ने अपने इस्तेअ़मारी व इल्हादी मंसूबों के लिए अपने जिन वफादारों को क़ाइदाना व हाकिमाना मनासिब पर बिठाया है, उन मुल्कों के मुसलमान दाइयों और इस्लाम के वफादारों को अभी तक मुश्किलात का सख़्त सामना करना पड़ रहा है, लेकिन वह मुश्किल हालात का मुक़ाबला करते हुए इस्लाम से वाबस्तगी को उभार रहे हैं, और इस्लाम की सरबलन्दी के लिए अपनी हौसला मन्दी का मुज़ाहरा करते रहते हैं, इसी का असर है कि तुर्की में बिलआख़िर इस्लाम पसन्द पार्टी ने इलेक्शन में इतनी सीटें हासिल कर ली कि हुकूमत की सरबराही उसके इस्लाम पसन्द लीडर नजमुद्दीन अरबकान को मिल गयी और उनके हुकूमत में आ जाने से तुर्की में इस्लामी वफ़ादारी खुल कर जाहिर की जाने लगी वहां के हालिया दौरे में यह बात पहली मर्तबा नज़र आयी कि जहां इस्लाम से वाबस्तगी ज़ाहिर करना

ख़तरनाक समझा जाता था, अब कई दूसरे इस्लामी मुल्कों की तरफ से इस्लाम से वाबस्तगी अलल ऐलान जाहिर की जाने लगी है।

नोटः– इस समय तुर्की के सद्र तय्यिब अर्दग़ान हैं और वहां इस्लाम का ग़ल्बा है अल्लाह तआ़ला तय्यिब अर्दग़ान और उनके समर्थकों की हिफाज़त फरमाए।

❖❖❖

(तामीरे हयात 10 जुलाई 2018 से ग्रहीत)

इस्लाम के तीन बुन्यादी .....

घमंड व स्वार्थ की भावना को दबाता और ख़त्म करता है, दुन्या की तुच्छ वस्तुओं की लालच से आज़ादी दिलाता है, एहतियात और सन्तुलन का रास्ता दिखाता है और बे नतीजा व अलाभकारी प्रयासों से दूर रखता है।

मीमांसकों और विशेषज्ञों, ज्ञानियों के दामन और उनके बड़े–बड़े पुस्तकालय उन जानकारियों से एकदम खाली होते हैं जो नबियों को खुदा की तरफ से मिलती हैं। उनको आखिरत की उन मन्ज़िलों की हवा भी हनीं लगी होती है जिनकी अंबिया अपनी बसीरत की वजह से ख़बर देते हैं और जिन के सम्बन्ध में विस्तार से बताते हैं, उनकी दौड़ भाग दुन्या की हद तक है। मौत की सरहद के पार वह झांक कर देख नहीं सकते।

अनुवादः– *वह तो दुन्या की ज़िन्दगी के बाहरी रूप को जानते हैं, और आख़िरत से ग़ाफिल (बेपरवाह) हैं।*

(सूरः अल्–रूम 7)

अनुवादः– *आखिरत के बारे में उन लोगों की जानकारी ख़त्म हो गई है, बल्कि वे उसकी ओर से शक में हैं, बल्कि यह उससे अंधे हो रहे हैं।*

(सूरः अंनमल 66)

वैज्ञानिकों और विषय विशेषज्ञों की हक़ीक़त मानवजाति के बेड़ों के इन खेवनहारों के मुकाबले में वही होती है जो एक अनुभवी जहाज़रां के सामने समुद्र तट पर सुन्दर सीपियों के साथ खेलने वाले बच्चों की। इन विद्वानों के लिए ज़रूरी है कि नबियों के सामने शिष्य बन कर बैठें और उनसे अपनी निजात व सौभाग्य का ज्ञान प्राप्त करें, सारे ज्ञान, कला–कौशल, उनकी सारी खोज बेकार बल्कि उनके लिए बवाल है। अपने ज्ञान पर गर्व, अपनी खोज पर संतोष और नबियों के ज्ञान से पल्लू झाड़ लेना उनके लिए और उन तमाम आबादियों और मुल्कों के लिए जो उनका नेतृत्व स्वीकार करें और अपनी किस्मत उनके सुपुर्द करें, मौत का पैग़ाम है। जिन व्यक्तियों या कौमों ने अपने ज़माने के प्रचलित ज्ञान–विज्ञान पर भरोसा करके नबियों की शिक्षा व निर्देश की अनदेखी की वह बर्बाद हो गयीं।

अनुवादः– *'जब उनके रसूल उनके पास स्पष्ट प्रमाण ले कर आए तो जो (थोड़ा बहुत) ज्ञान उनके पास था वे उसी पर खुश होते रहे, और उनको उसी चीज़ ने आ घेरा जिनका वे मज़ाक़ उड़ाते थे।*

(सूरः अल्–मोमिन 83)

..... **जारी**.....

❖❖ ❖

कुछ पुरानी शरई तौलें (अवज़ान) ग्राम की तौल में

—इदारा

लगभग 30 वर्षों पहले मैंने मुफ़्ती मुहम्मद शफी साहब की ''अवज़ाने शरईया'' से मदद ले कर कुछ शरई तौलों को ग्राम में बदल कर प्रकाशित किया था उस समय तक आमतौर से यही जानकारी थी कि 1 किलो ग्राम =86 तोला, उसी हिसाब से मैंने ग्राम में तौलें लिखी थीं, परन्तु कई वर्षों पश्चात मुझे एक पुस्तक ''अनमोल मैट्रिक नापतोल'' प्रकाशित कमल पुस्तकालय, नई दिल्ली 110006 की मिली जिसमें एक सेर = 933 ग्राम लिखा था, मैंने पिछला हिसाब कैंसिल करके इस हिसाब से ग्राम बनाये परन्तु 15 जुलाई 2018 को मुझे इण्टरनेट से ज्ञात हुआ कि एक सेर (80 तोला)=933.105 ग्राम है यद्यपि यह हिसाब पिछले दोनों हिसाबों से बहुत ही कम अन्तर रखता है फिर भी यह हिसाब अत्यन्त सूक्ष्म है अतः अब इस हिसाब से ग्राम की तब्दीली लिख रहा हूं सबसे पहले कुछ पुरानी हिन्दोस्तानी मापें:—

8 रत्ती = 1 माशा

12 माशा = 1 तोला

96 रत्ती = 1 तोला

5 तोला = 1 छटाँक

16 छटाँक = 1 सेर

80 तोला = 1 सेर

उपमहाद्वीप (हिन्द व पाक) के जम्हूर उलमा (बहुसंख्यक इस्लामिक विद्वानों) के निकट ज़कात फर्ज़ होने के लिए चाँदी का निसाब 200 दिरहम अर्थात् साढ़े बावन तोला (52.5 तोला) चाँदी और सोने का निसाब 20 मिस्काल अर्थात् साढ़े सात तोला (7.5 तोला) सोना और एक साअ़ भर कर गेहूँ या जौ का भार (वज़्न) 1040 दिरहम अर्थात् 273 तोला ईदुलफित्र के अब तक छपे खुतबों में साअ़ का वज़्न 273 तोला मौजूद है। और महरे फातिमी के तीन क़ौल हैं:—

(1) 480 दिरहम, 126 तोला चाँदी

(2) 500 दिरहम, 131.25 तोला चाँदी

(3) 400 मिस्क़ाल, 150 तोला चाँदी

इन्हीं तौलों को ग्राम में बदलना है।

80 तोला = 933.105 ग्राम

1 तोला = 933.105÷80

= 11.6638125 ग्राम

52.5 तोला = 11.6638125x52.5

= 612.350156 ग्राम

(चांदी का निसाब)

7.5 तोला = 11.6638125x7.5

= 87.4785938 ग्राम

(सोने का निसाब)

1 साअ़ = 11.6638125x273

= 3 किलो 184 ग्राम 221 मिलीग्राम

आधा साअ़ = 11.6638125x520

= 3.184221x2

1 किलो ग्राम 592 ग्राम 110 मिलीग्राम

इसी तौल से एक आदमी का फितरा और एक रोज़े का फिद्या दिया जाता है, साअ़

चूंकि नापने वाला पैमाना है इसलिए अच्छे और घटिया गेहूं की तौल में अन्तर हो सकता है अतः कम से कम 1 किलो 600 ग्राम का हिसाब रखना चाहिए इससे भी ज़ियादा बढ़ा दें तो अच्छी बात है।

महरे फातिमी के तीन क़ौल हैं:—

(1) 480 दिरहम = 126 तोला
= 11.6638125x126
1 किलो 469 ग्राम 640 मिली ग्राम चाँदी

(2) 500 दिरहम = 131.25 तोला
= 11.6638125x131.25
1 किलो 530 ग्राम 875 मिली ग्राम चाँदी

(3) 400 मिस्क़ाल चाँदी = 150 तोला
= 11.6638125x150
1 किलो 749 ग्राम 572 मिली ग्राम अर्थात 1 किलोग्रम 750 ग्राम चाँदी

यही तीसरा क़ौल अधिक प्रसिद्ध तथा अधिक शुद्ध है। प्वाइंट के पश्चात् 3 अंक लेते हुए ग्राम और मिलीग्राम में खुलासा

चाँदी का निसाब = 612 ग्राम 350 मिलीग्राम

सोने का निसाब = 87 ग्राम 478 मिलीग्राम

जमहूर के निकट एक दिरहम = 25.2 रत्ती
=0.2625 तोलाx11.6638125
=3.06175078=3.062 ग्राम लगभग

मिस्क़ाल = 36 रत्ती
= 0.375 तोला
=0.375 x 11.6638125
=4.37392969 =4.374 ग्राम

48 मील अँग्रेज़ी = 77 किलो मीटर 247 मीटर

❖❖❖

शहादत

शहादत से मानव ये मरता नहीं है।
है जीवित मगर हम को दिखता नहीं है॥
उसे मिल चुका है हमेशा का जीवन।
हर इक को ये सम्मान मिलता नहीं है॥

❖❖❖

सलाम का अर्थ

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु ''तुम पर अल्लाह की सलामती हो और अल्लाह की रहमत हो और उस की बरकतें हों''

अच्छा सलाम यही है इस का जवाब है ''व अलैकुमु स्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू'' इस का भी वही अर्थ हुआ जो ऊपर लिखा गया, ''अस्लामु अलैकुम'' कहना और ''व अलैकुमुस्सलाम'' जवाब देना भी दुरुस्त है, लेकिन पहले वाले सलाम में 30 नेकियां मिलेंगी और इस सलाम में केवल 10 नेकियां मिलेंगे।

अस्सलामु का अर्थ है अल्लाह का सलाम या अल्लाह की ओर से सलामती, सलामती का अर्थ है हर प्रकार की सुरक्षा।

रहमत का अर्थ है दया, कृपा। बरकत का अर्थ है हर भलाई में, हर भली वस्तु में बढ़ोतरी।

❖❖❖

आसी की दुआ

या रब मैं गुनहगार मुझे बख़्श दीजिये
तौबा हज़ार बार मुझे बख़्श दीजिये
सारी ख़ताएं आँखों में मेरी हैं या ग़फ़ूर
दिल से हूं शर्मसार मुझे बख़्श दीजिये
माबूद फ़क़त तू है ईमान है मेरा
लेकिन हूं ख़ताकार मुझे बख़्श दीजिये
ईमान नबी पर है उन पर मेरे सलाम
या रब हों सद हज़ार मुझे बख़्श दीजिये
खुलफाए राशिदीन से रखता हूं महब्बत
सुन्नी हूं आशकार मुझे बख़्श दीजिये
अबनाए नबी और बनातुन्नबी सभी
मेरे हैं वह सरदार मुझे बख़्श दीजिये
अज़वाजे नबी माएं हैं मेरी वह सब की सब
मैं उन का खिदमतगार मुझे बख़्श दीजिये
अस्हाबे नबी से हुआ राज़ी तू ऐ खुदा
मैं उनका ताबेदार मुझे बख़्श दीजिये
या रब नबीये पाक पे लाखों सलाम हों
मैं उनका जांनिसार मुझे बख़्श दीजिये
अस्हाबे नबी पर भी या रब मेरे सलाम
मैं उन का नमक ख़्वार मुझे बख़्श दीजिये
अज़वाज और औलादे नबी पर भी हों सलाम
मैं उन का जेर बार मुझे बख़्श दीजिये
आसी हैं बे क़रार कि इस्यां हैं बेशुमार
या रब तू है ग़फ़्फ़ार उसे बख़्श दीजिये

❖❖❖

नई पीढ़ी के ईमान और अक़ीदे की सुरक्षा

—हज़रत मौलाना अली मियां नदवी रह0

—हिन्दी इम्ला हुसैन अहमद

इस समय सब से बड़ा महाज (लड़ाई का स्थान) यह है कि हमारी मिल्लते इस्लामिया की आने वाली पीढ़ी मुसलमान रह जाय, और वह सिर्फ ज़ेहनी, फिक्री, तहजीबी और सक़ाफती एतिबार से नहीं (अर्थात केवल सांस्कृतिक रूप में नहीं) बल्कि एतिक़ादी इरतिदाद (वैश्वासिक धर्म त्याग) से बच सके, जो लोग हमारे मदारिस से फारिग हों, (इस्लाम धर्म की शिक्षा पूरी कर लें) वह इस महाज (युद्ध स्थल) को संभालें, इस महाज का चार्ज लें, और अपने को इस महाज को अर्पित कर दें, इसके लिए जरूरत है इस बात की कि क़स्बा क़स्बा , शहर शहर और गांव गांव में मदरसों और मकतबों की बुन्याद डाली जाए, मस्जिदों में मकतब काइम किए जाएं अगर पूरे वक़्त के मकतब न काइम किए जा सकें तो सबाही व मसाई (प्राभाती तथा सांय कालीनी) कक्षाएं हों, और जो लोग आधुनिक शिक्षा से शिक्षित हैं, और अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में भेजने के लिए मजबूर हैं, उनके बच्चों को दीनी जानकारी दें अगर उन बच्चों को अभी से बचाने का प्रयास नहीं किया गया तो भय है कि आगे चल कर इस्लामिक विश्वास की दृष्टि से उन बच्चों को मुसलमान कहना शुद्ध भी होगा या नहीं? और आने वाली पीढ़ी तौहीद (एकेश्वरवाद) व शिर्क (अनेकेश्वरवाद) और कुफ्र व ईमान (नास्तिकता तथा आस्तिकता) में अन्तर कर सकेगी या नहीं? रिसालत, (ईशदौत्य) मंसबे रिसालत (ईशदौत्य के पद) और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अन्तिम नबी मानेगी या नहीं? इस समय समस्या यह है कि कौन किस महाज (युद्ध स्थल) को संभालता है, दीन के आलिमों को चाहिए कि वह तै करें कि हम इस खतरनाक और नाज़ुक महाज पर सीना सिपर रहेंगे डटे रहेंगे। फिर अल्लाह तआला आप की मदद फरमाएगा, और साधन उपलब्ध करेगा, तथा आने वाली पीढ़ी को मुसलमान बाक़ी रखने के लिए जो भी प्रयास किया जा सके किया जाय, जो हाथ पैर मारे जा सकें, मारे जाएं, और जो परिश्रम किया जा सके किया जाए यह सब से बड़ा युद्ध स्थल है।

❖❖❖

Nadwatul Ulama
P.O. Box No. 93, Tagore Marg,
Lucknow - 226007 (India)

ندوة العلمـــاء
ص.ب.٩٣/، تيغورمارغ،
لكناؤ-٢٢٦٠٠٧ يوبى (الهند)

Date ______________ التاريخ ______________

09/09/2018 ۲۸/ذی الحجہ ۱۴۳۹ھ

باسمہ تعالیٰ

अपील बराए तामीर जदीद हास्टल

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारूल उलूम नदवतुल उलमा हजरत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमत में लगा हुआ है, दारूल उलूम में इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़ते हैं, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो जाती है। इस सूरतेहाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधक कमेटी ने नये छात्रावास के निर्माण का निर्णय लिया है, जिसका संगे बुन्याद हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम के दस्ते मुबारक से रखा जा चुका है, और अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्ज़िला होगा, 36 कमरे और 2 हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा संबन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें और वह संतुष्टि होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें।

इस निर्माण कार्य पर 3,61,74,600 (तीन करोड़, एक्सठ लाख, चौहत्तर हज़ार, छः सौ) रूपये, और एक कमरे पर लगभग साढ़े चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले खैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा। हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्य ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे।

हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुंचेगा।

मौ0 मु0 वाज़ेह रशीद नदवी	प्रो0 अतहर हुसैन	मौ0 सईदुररहमान आज़मी नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)	(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)	(मोहतमिम दारूलउलूम, नदवतुल उलमा)

चेक / ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।

NADWATUL ULAMA
A/C NO. 10863759733 (IFSC CODE - SBIN0000125)
(State Bank of India Main Branch, Lucknow.)

और इस पते पर भेजें।

NIZAMAT OFFICE, NADWATUL ULAMA,
P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,
LUCKNOW - 226007 (U.P.)

Phone: +91-522-2741316, Guest House: 2740141, Fax: 2741023
e-mail: nadwa@sancharnet.in, website: www.nadwatululama.org

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये

उर्दू में लिखने पढ़ने की सलाहीयत पैदा कीजिये।
اردو میں لکھنے پڑھنے کی صلاحیّت پیدا کیجئے۔
उसकी क़ाबिलीयत में कोई शक नहीं।
اس کی قابلیّت میں کوئی شک نہیں۔
इस दवा की क्या खासीयत है।
اس دوا کی کیا خاصیّت ہے؟
उसके चेहरे से नूरानीयत टपकती है।
اس کے چہرہ سے نورانیّت ٹپکتی ہے۔
अपने भाई की ख़ैरीयत मालूम करो।
اپنے بھائی کی خیریّت معلوم کرو۔
जाहिलीयत की बातें मत करो।
جاہلیّت کی باتیں مت کرو۔
मग़रिब में उ़रयानीयत आ़म है।
مغرب میں عریانیّت عام ہے۔
किसी की शख़्सीयत मजरूह मत करो।
کسی کی شخصیّت مجروح مت کرو۔
इस्लाम में रुहबानीयत नहीं है।
اسلام میں رہبانیّت نہیں ہے۔
हर काम में लिल्लाहीयत चाहिए।
ہر کام میں للّٰہیّت چاہیئے۔